

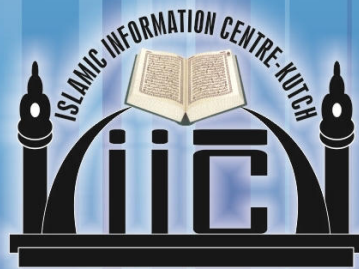
પ્રકાશન નં. ૬

મختصر کتاب الکبائر

મુખ્તસર કિતાબુલ-કબાઈર

તાલીફ : ઈમામ શમ્સુદીન ઝહબી રહ.

ગુનાહે-કબીરા
(ગુજરાતી લિપિયાંતર)



Islamic Information Centre-Kutch

પ્રકાશન નં. ૬

Mukhtasar Kitabul-Kaba'air

મુખ્તસર કિતાબુલ-કબાઈર

તાલીફ : ઈમામ શમ્સુદ્દીન ઝહબી રહ.

ઉર્દૂ તરજૂમા : સઈદ અહમદ કમરુઝ્-ઝમાં

ગુનાહે-કબીરા

ગુજરાતી લિપિયાંતર : મુહમ્મદ જમાલ પટીવાલા



ઈસ્લામિક ઈન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ

હોટલ નૂરાની પાસે, ડાંડા બજાર, ભૂજ (કચ્છ)

મો. : 8401786172 Blog : iickutch.blogspot.in

© સર્વ હકક પ્રકાશકને આધીન

Mukhtasar Kitabul-Kaba' air

Imam Shamsuddin Zahabi R.A.

Urdu Translation : Sae' ed Ahmad Qamaruz-Zaman

Gujarati Lipiyantar : Muhammad Jamal Patiwala

—: Publisher :—

ISLAMIC INFORMATION CENTRE - KUTCH

Near Hotel Noorani, Danda Bazar, BHUJ (Kutch, Gujarat)

Mobile : 8401786172 Blog : iickutch.blogspot.in

પ્રથમ આવૃત્તિ : પ્રત : ૧૦૦૦, મે-૨૦૧૩
બીજી આવૃત્તિ : પ્રત : ૧૦૦૦, નવેમ્બર-૨૦૧૭

પૃષ્ઠ : ૫૬

મુદ્રક : યુનિક ઓફસેટ, અહમદાબાદ.

इंडेक्स

अनाविन	संख्या नंबर
मुकद्दमा	७
कबाईर की ता'रीफ	११
कबीरा गुनाहों का बयान	१३
१. शिर्क बिल्लाह	१३
शिर्क की किस्में - शिर्क अकबर, शिर्क असगर	१३
२. कत्ल करना	१४
३. शहू-टोना करना	१४
४. नमाज ना पढ़ना	१५
५. जकात ना देना	१५
६. बिला उजूर रमजान के रोजे ना रचना	१६
७. ईस्तेताअत के आवजूह हज्ज ना करना	१६
८. वालदैन की नाइरमानी करना	१६
९. अह्लो-अकारिब से कत्अ-ता'ल्लुकी	१७
१०. जिनाकारी	१७
११. लवातत और औरत के दुबुर में मुबाशरत करना	१८
१२. सूदभोरी	१८
१३. अल्लाह और रसूल की तरफ जूटी बात मन्सूब करना	१८
१४. यतीम का माल जाना	१८
१५. मैदाने-जिहाद से इरार ईप्तिहार करना	२०
१६. हुकमरानों का रिआया के साथ धोकेबाजी और जुल्मो-सितम करना	२०
१७. इफ्र व तकब्बुर और जुदपसंदी	२२

૧૮.	જૂટી ગવાહી દેના	૨૩
૧૯.	શરાબનોશી	૨૩
૨૦.	જુઆબાઝી	૨૪
૨૧.	પાકદામન ઔરતોં પર તોહમત લગાના	૨૪
૨૨.	માલે-ગનીમત મેં ખિયાનત કરના	૨૪
૨૩.	ચોરી કરના	૨૫
૨૪.	રાહઝની કરના	૨૫
૨૫.	જૂટી કસમ ખાના	૨૫
૨૬.	ઝુલ્મો-સિતમ કરના	૨૬
૨૭.	ઝાલિમાના ટેક્સ વુસૂલ કરના	૨૬
૨૮.	હરામખોરી કરના	૨૭
૨૯.	ખુદકુશી કરના	૨૮
૩૦.	દરોગગોઈ કા આદી હોના	૨૮
૩૧.	ઈસ્લામી કવાનીન કે ખિલાફ ફૈસલા કરના	૨૯
૩૨.	ફૈસલા કરને પર રિશવત લેના	૨૯
૩૩.	ઔરતોં ઔર મર્દો કા બાહમી મુશાબેહત ઈખ્તિયાર કરના	૩૦
૩૪.	દય્યુસ સિફત હોના	૩૦
૩૫.	હલાલા કરના ઔર કરાના	૩૦
૩૬.	પેશાબ સે તહારત હાસિલ કરના	૩૧
૩૭.	જાનવર કે ચેહરે કો દાગના	૩૧
૩૮.	દુનિયા કે લિયે ઈલ્મે-દીન હાસિલ કરના	૩૨
૩૯.	ખિયાનત કરના	૩૩
૪૦.	એહસાન જતલાના	૩૩
૪૧.	કઝા વ કદ્ર કા ઈન્કાર	૩૪
૪૨.	તજસ્સુસ કરના	૩૪
૪૩.	યુગલખોરી કરના	૩૪
૪૪.	લા'ન-વ-તા'ન કરના	૩૫
૪૫.	ગદારી ઔર બેવફાઈ કરના	૩૬
૪૬.	કાહિનોં ઔર નજૂમીયોં કી તસ્દીક કરના	૩૬

४७.	शौहर की नाकरमानी करना.....	३७
४८.	कपड़ों, दीवारों और पत्थरों पर तस्वीरे बनाना	४१
४९.	मुसीबत के वक्त नोडागरी व सीनाकूबी करना	४१
५०.	सरकशी करना	४२
५१.	कमजोरों और औरतों पर ज़्यादाती करना	४२
५२.	पडोसी को तकलीफ़ पहुंचाना	४३
५३.	मुसलमानों को तकलीफ़ पहुंचाना	४३
५४.	टपनों से नीचे कपडे पहनना	४३
५५.	सोने, चांदी के बरतन धस्तेमाल करना	४४
५६.	मर्दों का रेशमी और जलबी मल्बूसात धस्तेमाल करना	४४
५७.	गुलाम का मालिक के पाससे भाग जाना	४४
५८.	गैरुल्लाह के लिये जिब्द करना	४५
५९.	जान-बूझकर अपने आपको बाप के अलावा	४५
	किसी ओर तरफ़ मन्सूब करना	
६०.	हुजूल बलसो-मुबाहिसा करना	४५
६१.	जुइरत से आधे पानी रोकना	४६
६२.	नापतौल में कमीबेशी करना	४६
६३.	तदबीरे-धलाही से बेजौफ़ हो जाना	४६
६४.	मुरदार जानवर और सुव्वर का गोशत खाना	४८
६५.	नमाजे-जुम्आ और जमाअत को छोडना	४८
६६.	अल्लाह त्आला की रलमतों से मायूस होना	४८
६७.	मुसलमान को काफ़िर ठहराना	४८
६८.	मको-इरेब और धोकेबाजी	४८
६९.	मुसलमानों की जसूसी करना और परदादरी करना	५०
७०.	सलाबा को बूरा-त्वला कहना	५०
७१.	नाहक ईसला करना	५०
७२.	इलश कलामी करना	५१
७३.	नख़ में औबजुध करना	५१
७४.	मुरदों पर नोडागरी करना	५१

७५.	संगे-मील को मिटा देना	५१
७६.	किसी बुरी आदत का ईजाद करना	५२
७७.	बाल में बाल मिलाना और जिस्म को गोदना और गुदवाना	५२
७८.	मुसलमान को लोहा टिभाकर धमकी देना	५३
७९.	हरम में मुल्हदाना काम करना	५३
दुआ	५४
इस्ल	बा'ज उन गुनाहों को बयान, जिनके कबीरा होनेका अह्तिमाल है. ...	५६



मुकदमा

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ، وَنَسْتَعِينُهُ، وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ
مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ
لَهُ، وَمَنْ يَضِلَّ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا
شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ. أَمَّا بَعْدُ :

(ईन्नल् हम्द लिल्लाह, नह् मद्दुहु, व-नस्तईनुहु, व-नस्तगुर्फिरुहु, व-नउीउ
बिल्लाहि मिन् शुरुरि अन्कुसिना व-मिन् सय्यिआति अम्मालिना, मय्युह्दिल्लिल्लाहु
इ-ला मुजिल्ल-लहु, व-मय्युज्जिल्लि इ-ला हादिय लहु, व-अशुहुहु अन्-ला-ईलाह
ईल्लिल्लाहु व-इहुहु ला-शरीक लहु, व-अशुहुहु अन्न मुहम्मदन् अब्दुहुहु व-रसूलुहु,
अम्मा बअद् -)

या अयुहल्लजीना आमनूत्-तकुल्लाह उक्क तुकातिहि, व-ला तमूतुन्न ईल्ला
व-अन्तुम् मुस्लिमून. (आले ईमरान : १२)

“अय ईमानवालों ! अल्लाह से डरो, जैसे कि डरने का उक्क है, और तुमको
मौत न आये, मगर इस हालमें कि तुम मुसलमान हो.”

या अयुहल्लासुत्-तकू रब्बकुमुल्लजी भलककुम् मिन् नइसिंव्-वाहिएदतिंव्-व-
भलक मिन्हा जव्जहा व-भस्स मिन्हुमा रिजालन् कसिरंव्-व निसाआ, वत्तकुल्लाहल्लजी
तसा-अलून बिही वल्-अरुहाम ईन्नल्लाह कान अलईकुम् रकीबा. (निसा : १)

“अय लोगों ! अपने परवरद्विगार का तकवा ईप्पियार करो, जिसने तुम
(सभ)को ओक ही ज्ञान से पैदा किया और उसीसे उसका जोडा बनाया और उन दोनों
से भा-कसरत मर्द और औरतें ईला दिये और अल्लाह का तकवा ईप्पियार करो, जिसके

वास्ते से अक-दूसरे से मांगते हो, और कराबतों के बाब में भी (तकवा धिन्नियार करो) बेशक अल्लाह तुम पर निगरां है.”

“या अयुहल्लजीन आमनूतकुल्लाह व-कूलू क्वलन् सदीदा. युसूलिह लकुम् अम्मालकुम् व-यग़्फ़िर लकुम् जुनूबकुम् व-मंय-युतिहल्लाह व-रसूलहु इकद् इला इक़्कलन् अजीमा.” (अहज़ाब : ७०-७१)

“अय धिमानवालों ! अल्लाह से डरो और रास्ती की बात करो. (अल्लाह) तुम्हारे आ'माल दुरस्त कर देगा और तुम्हारे गुनाह मुआफ़ कर देगा और जिस किसीने अल्लाह और उसके रसूल की धिताअत की, सो वो बडी कामियाबी को पहुँच गया.”

अम्मा बाद —

बेहतरीन क्लाम अल्लाह त्आला की किताब है, और बेहतरीन तरीका रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम् का तरीका है, और बेहतरीन चीज़ें बिदअतें हैं, और (दीन में) हर धिन्नदकरदा चीज़ें बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है और हर गुमराही का अंजाम जहन्नम है.

धिरशादे धिलाही है :

“धन् तज्जतिबू क्बाधर मा-तुनूहलन् अन्हु नुक़्फ़िर अन्कुम् सय्यिआतिकुम् व-नुद्भिल्कुम् मुद्भलन् करीमा.” (निसा : ३१)

“अगर तुम उन बडे गुनाहों से जो तुम्हें मनअ किये गये हैं, बयते रहो तो हम तुम से तुम्हारी (धोटी) बूराधियां दूर कर देंगे और तुम्हें अक धिन्नत की जगह दामिल कर देंगे.”

धिस आयते-करीमा में अल्लाह त्आला ने धिसका वअदा इरमाया है के जो शप्स कबीरा गुनाहों से धिज्तिनाब करे, तो वो उसको अपनी मरज़ी और इज़लो-करम से जन्नत में दामिल करेगा, क्यूं के सगीरा गुनाह पंज वक्ता नमाज़ों और नमाज़े-जुम्आ और रमज़ान के रोज़ों की पाबंदी की वजह से मुआफ़ कर दिये जाते हैं, जिसकी दलील रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम् का ये धिरशाद है :

“पंज वक्ता नमाज़ें, जुम्आ से जुम्आ तक, और रमज़ान से रमज़ान तक

की ईबादतें ईस दरमियान के सारे गुनाहों के लिये कइफारा होती हैं, बशर्त ये के कबीरा गुनाहों से ईज्तिनाब किया जाये.”

(ईमाम मुस्लिम ने ईसको रिवायत किया है.)

ईस से बभूबी अंदाजा होता है कि गुनाहे-कबीरा से अइतिराज ईन्तिहाई अलम थीज हैं (ईस तंबीहा के साथ के तौबा व ईस्तिगफार के बाद गुनाहे-कबीरा बाकी नहीं रह जाते और गुनाहे-सगीरा मुसलसल करने से सगीरा ही बरकरार नहीं रहता, जैसा कि अइले ईल्म ने बयान इरमाया है.)

कबीरा गुनाह से अइतिराज (बयने) व ईज्तिनाब (दूर रहने) के लिये हमें उनका जानना ईन्तिहाई जरूरी है, युनांये हजरत हुजैफा ईब्ने यमान रदिएल्लाहु अन्हु इरमाते हैं के —

“लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम से नेकीयों के मुता’द्विक पूछा करते थे, लेकिन मैं हंमेशा बूराईयों की बाबत दरयाइत किया करता था, ईस अंदेशे से के वो मुजे लाइक ना हो जाये.”

(बुजारी व मुस्लिम और दूसरे मुहदीसीन ने रिवायत किया है)

किसी शाईर ने कहा है —

अरइतुश-शर ला लिश-शरि लाकिनू लितवकिडी व-मंल्लम् यअरिइिल् अईर
मिनश-शरि यकउ इिडी.

तरजुमा : “मैंने शर की वाकइयत बराअे शर नहीं हासिल की है, बल्के उससे बयने के लिये की है, क्यूं के जो शप्स भैरो-शर में तमीज नहीं करता वही शर का ईरतिकाब कर लेता है.”

लिहाजा हम ने ये मुईद समज के ईन कबीरा गुनाहों की तइसिलात का तजकरा कर दें, जिसको ईमाम शम्सुदीन जहबी ने अपनी मशहूर किताब ‘अल-कबाईर’ में जमा इरमाया है. ईसके अलावा कुछ ओर कबाईर का ईजाफा कर दें, जैसे दूसरे उलमा ने अपनी-अपनी किताबों में मुतइरििक मकामात पर बयान इरमाया है, ताके हम ईससे ईज्तिनाब की (दूर रहने की) व अइतिराज की (बयने की) कोशिश करें. ईस सिलसिले में हमने कुरआने-करीम और अहादीसे-सहीहा से अेक दो दलीलें पेश करने पर ईक्तीफा किया है और बा’ज गुनाहे-कबीरा की मुअसर सी तशूरीह-

व-तङ्गीर कर दी है, जिसका मङ्गल-व-मा'नी पूरी तरह वाजेह ना था. इससे पहले मैंने किताबुल-कबाईर की तल्पीस करके इसे किताब 'अत-तरीक ईलल्-जन्नल' के पहले हिस्से में मुस्तकिल इस्ल के तौर पर सामिल किया था, लेकिन उस वक्त किताबुल-कबाईर का ओक नाकिस नुस्खा मेरे सामने था, बाद में उस्ताद महीयुद्दीन भस्तू की तेहकीक के साथ मौसिस उलूमे-कुर्आन का शाओ-करदा मुलकिक और कामिल नुस्खा मुझे दस्तयाब हो गया, युनांये इसमें मौजूद ईजाइं से मैंने इस नये ओडिशन में ईस्तइादा किया है.

आपिर में अल्लाह त्आला के अस्माओ-हुस्ना और सिफाते-आलिया के जरीये अल्लाह से दुआ करता हुं के इस रिसाले को जुद मेरे और सारे मुसलमानों के लिये नङ्अबक्ष और जपीरओ-आपिरत बनाये. — व-आपिरु दा'वाना अनिल् उम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन.



કબાઈર કી તા'રીફ

બા'ઝ લોગ ગુનાહે-કબીરા સિફ ઉન સાત ચીઝોં કો હી સમજતે હૈં, જિનકા બયાન 'સાત કબીરા ગુનાહ' વાલી હદીસ મેં હુઆ હૈ, હાલાંકે યે સહીહ નહીં, ક્યૂં કે યે સાતોં ચીઝોં દીગર ગુનાહે-કબીરા કે ઝિમ્ન મેં હૈ, ઓર ઇસકે મા'ની યે નહીં હૈ કે 'કબાઈર' સિફ ઇન સાત ચીઝોં મેં મહદૂદ હૈ. ઇસ સિલસિલે કે હઝરત ઇબ્ને અબ્બાસ રદિઅલ્લાહુ અન્હુ કા ઇરશાદ હૈ કે ઉનકી તા'દાદ સત્તર તક પહુંચ જાતી હૈ, ના કે સિફ સાત તક મહદૂદ હૈ. (ઇમામ તબરી ને સહીહ સનદ સે રિવાયત ક્રિયા હૈ.)

ક્રિતાબ 'અલ-કબાઈર' કે મુસન્નિફ ઇમામ શમ્સુદીન ઝહબી રહમતુલ્લાહ અલયહિ ફરમાતે હૈં કે સાત ગુનાહે-કબીરાવાલી હદીસ મેં કબાઈર કો મહદૂદ નહીં કર દિયા ગયા હૈ.

શૈખુલ ઇસ્લામ ઇબ્ને તૈમિયા રહમતુલ્લાહ અલયહિ વગૈરહ ને કબીરા કી યૂં તા'રીફ કી હૈ —

“ગુનાહે-કબીરા હર ઉસ ગુનાહ કો કહતે હૈ, જિસ કે મુરતકિબ કે લિયે દુનિયા મેં કોઈ સજા મુકરર કી ગઈ હો યા આબિરત મેં કોઈ વઈદ સુનાઈ ગઈ હો, ઓર શૈખુલ ઇસ્લામ ને મઝીદ ફરમાયા કે ઇસકે મુરતકિબ સે ઇમાન કી નફી કી ગઈ હો યા મલૂગિન વગૈરહ જૈસે અલ્ફાઝ ઇસ્તેમાલ ક્રિયે ગયે હો.”

હાસિલે કલામ યે હૈ કે ઉલમા કે કૌલ કે મુતાબિક તૌબા-વ-ઈસ્તેગફાર કે બાદ ગુનાહે-કબીરા કા વજૂદ નહીં રહતા ઓર ગુનાહે-સગીરા કો મુસલ્સલ કરને સે વો સગીરા તક હી મહદૂદ નહીં રહતા.

બા'ઝ ઉલમા ને ગુનાહે-કબીરા કા જો એ'દાદ સુમાર ક્રિયા હૈ, ઉસકી તા'દાદ સત્તર યા ઉસસે ઝાઈદ તક પહુંચ જાતી હૈ.

યુનાંચે હમ ઉન કબીરા ગુનાહોં કો વાઝેહ કરને કી કોશિશ કર રહેં હૈં, જિન

કો ઈમામ શમ્સુદીન ઝહબી ને અપની મશ્હૂર કિતાબ 'અલ-કબાઈર' મેં ઝિક્ર કિયા હૈ. ઈસકે અલાવા બા'ઝ દૂસરે કબાઈર કા ભી ઝિક્ર કરેંગે, જિનકો ઉલમા ને મુખ્તલિફ જગહોં પર અપની-અપની કિતાબોં મેં બયાન કિયા હૈ, ઓર બા'ઝ કી મુખ્તસર તશ્રીહ-વ-તૌઝીહ ભી કર દી ગઈ હૈં.



कबीरा गुनाहों का बयान

(१) शिर्क बिल्लाह : एसकी दो किस्में हैं.

१. शिर्के अकबर :

अल्लाह तूआला के साथ किसी दूसरे की ईबादत करना, या किसी तरह की ईबादत गैरुल्लाह के लिये करना 'शिर्के-अकबर' कहलाता है. मसलन् : गैरुल्लाह के लिये जिब्द करना, पुकारना वगैरह जैसी ईबादत सामिल है. मुश्रिकीन अल्लाह तूआला की ईबादत के साथ बा'ज दूसरी चीजोंकी भी ईबादत करते थे. एसके गुनाहे-कबीरा होनेकी दलील मंद-दर्जह जेल आयते-करीमा है -

“ईत्रल्लाह ला यगुफ़िनु अंय-युश्रिक बिहि. व-यगुफ़िनु मा दून जालिक लिमंय-यशाअ.” (निसा : ४८)

“अल्लाह उसको तो बेशक ना बक्षेगा के उसके साथ शिर्क किया जाये, लेकिन उसके अलावा गुनाह जिस किसीके याहेगा बक्ष देगा.”

मजीद मा'लूमात के लिये किताब 'इतुदुल मज्जद शरह किताबुत्-तौहीद' का मुतालिआ कर लेना फायदेमंद होगा.

२. शिर्के असगर :

'शिर्के-असगर' आ'माले-सालेहा में रियाकारी और दिभावे को कहते हैं. एसकी दलील ईरशादे रब्बानी है -

“इवईलुल्-लिह्-मुसल्लीन, अल्लजीन हुम् अन् सलातिहीम् साहून, अल्लजीन हुम् युरा-उिन, व-यमूनउिनल् माउिन.” (माउिन : ४-७)

“सो बडी जराभी है जैसे नमाजीयों के लिये, जो अपनी नमाज को भुला बैठें हैं (और) जो जैसे हैं के रियाकारी करते हैं और भरतने की चीजों को भी रोके रहते हैं.”

ईसी सिलसिले में नबी सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम हदीसे-कुदसी में ईरशाह फरमाते हैं — (के अल्लाह त्आला फरमाता है के —)

“शिक के मुआमले में शुरका में, मैं सबसे ज्यादा बेनियाज हूँ. अगर किसीने नेकी करते वक्त मेरे साथ किसी ओर को भी शरीक कर दिया, तो मैं उसे और उसके शुरका को छोड़ देता हूँ, या'नी मुझे उसकी कोई जुरुरत नहीं है.” (मुस्लिम और ईब्ने माज ने रिवायत किया है, मुत्तसर सहीह मुस्लिम २०८८)

२. कत्ल करना :

अल्लाह त्आला का ईरशाह है —

“वल्लजीन ला यद्गीन मअल्लाहि ईलाहन् आपर व-ला यक्तुलूनन्-नइसल्लती हर्मल्लाहु ईल्ला बिल्-हकि व-ला यज़ून, वमंय-यइअल् जालिक यल्क अषामा. युजाअइ लहुल्-अजाबु यम्मल्-कियामति व-यफलुद् फीही मुहाना. ईल्ला मन् ताब व-आमन व-अमिल अमलन् सालिहा.”

(इरकान : ६८-७०)

“और जो अल्लाह के साथ किसी ओर मा'बूद को नहीं पुकारते और जिस (ईन्सान की) जान को अल्लाह ने हराम करार दे दिया है, उसे कतल नहीं करते, मगर हां, हक पर; और ना जिना करते हैं और जो कोई ऐसा करेगा उसको सजा से साबेका पड़ेगा, कियामत के दिन उसका अजाब बढ़ता जायेगा और उसमें हंमेशा जलील छोकर पडा रहेगा, मगर जो तौबा कर ले और ईमान ले आये और नेक काम करता है...”

३. ज़हू-टोना करना :

अल्लाह त्आला का ईरशाह है —

“व-ला किन्नश्-शयातीन कफ़रु युअल्लिमूनन्नासस्-सिहर.”

(बकरह, १०२)

“अलबत्ता शैतान (ही) कुछ किया करते थे, वो लोगों को सहर (ज़हूगरी) की ता'लीम देते थे.”

नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने फरमाया —

“सात मुद्लिक उमूर से ईज्तिनाब करो :

१. अल्लाह त्आला के साथ शिक करना,

२. ज़हू-टोना करना,
३. बिला ज़ुर्म किसीको कत्ल करना,
४. सूद खाना,
५. यतीम का माल हउप कर जाना,
६. मैदाने-जंग से पीठ ફेरकर भाग जाना,
७. पाक-दामन मोमिन औरतों पर तोहमत लगाना.”

(बुखारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है, सहीहुल ज़मेअ हदीस नं. १४४)

४. नमाज़ ना पढ़ना :

अल्लाह त्आला का एरशाद है —

“इ-अलइ मिम्-अअदिलिम् अलकुन् अजाउिस्-सलात वततबउिशू-शहवाति इसव्क यलकल गय्या. एल्ला मन् ताब व-आमन व अभिल सालिहा.”

(मरयम : ५८-६०)

“फिर उनके बाद ऐसे नाअलइ ज़ानशीं हुअे, जिन्होंने नमाज़ को बरबाद किया और ज्वाहिशत की पैरवी की, सो वो अनकरीब ज़राबी से द्योयार होंगें. अलबत्ता जिसने तौबा कर ली और एमान ले आया और नेक काम करने लगा.”

नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम का एरशाद है —

“आदमी और कुइ के दरमियान बस नमाज़ छोड देने का इक है.”

(मुस्लिम ने रिवायत किया है, नववी २/४३२)

दूसरी जग़ा एरशादे-गिरामी है —

“हमारे और उन (काफ़िरो)के दरमियान नमाज़ का मुआहेदा है, तो जिसने नमाज़ छोड दी उसने कुइ किया.”

(एमाम अहमद ने रिवायत किया है, सहीहुल ज़मेअ, हदीस नं. ४१४३)

५. ज़कात ना देना :

अल्लाह त्आला का एरशाद है —

“व-ला यहुसबन्नल्लज़ीन यब्बलून बिमा- आताहुमुल्लाहु मिन् इज़्लिही हुव अहरंल्-लहुम्, अल् हुव शर्-रुंल्-लहुम, स-युतव्वकून मा-अबिलू बिही यव्मल्-कियामा.” (आले एमरान : १८०)

“और जो लोग इसमें जुझ करते हैं, जो कुछ अल्लाह ने उन्हें अपने इज्जत से दृष्ट रखा है, वो हरगिज ये ना समझें के ये उनके हक में कुछ अच्छा है; नहीं, बल्के उनके हक में (बहुत) बुरा है. अनकरीब उन्हें क्रियामत के दिन तो क पहनाया जायेगा उस (माल) का, जिसमें उन्होंने जुझ किया.”

६. बिला उर्र रमजान के रोजे ना रफना :

नबी करीम सल्लल्लाहु अल्यहि व-सल्लम का एरशाद है —

“इस्लाम की बुनियाद पांच चीजों पर रफी गई है : इस बात की गवाही देना के अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अल्यहि व-सल्लम) अल्लाह के रसूल है, नमाज काँम करना, जकात अदा करना, बैतुल्लाह का हज्ज करना, और रमजान के रोजे रफना.”

(इमाम बुजारी ने रिवायत किया है, इत्तुल बारी, १/५४८)

७. इस्तेताअत के आवजूद हज्ज ना करना :

इसकी दलील मजकूर बाला हदीस है, जिसे इमाम बुजारी ने रिवायत किया है, क्यूं के हज्ज ली इस्लाम के पांच अरकान में से अक अहम रुकन है और इस्तेताअत रफते हुअे इसको अदा ना करना गुनाहे-कबीरा है.

८. वालदैन की नाइरमानी :

अल्लाह त्आला का एरशाद है —

“इम्मा यब्लुगन्न इन्दकल्-किबर अहदुहुमा- अक् किलाहुमा इ-ला तकुल्-लहुमा- उकिंक्व-व-ला तन्हूरुहुमा व-कुल्-लहुमा क्वलन् करीमा. वप्किज़ लहुमा जनाहज़-ज़ुव्लि मिनर्-रहमति व-कुलर्-रब्बिर्-रहमूहुमा कमा रब्बयानी सगीरा.” (बनी इसराईल : २३-२४)

“अगर वो तेरे सामने बुढापे को पहुंय जाये उन दोनोंमें से अक या दोनों, तो उनसे उइ ना केहना और ना उनको जिण्डकना और उनसे अदब के साथ बातचीत करना और उनके सामने मुहब्बत से इन्किसारी के साथ जुके रहना और कहते रहना के अय मेरे परवरदिगार ! उन पर रहम इरमा, जैसा के इन्होंने मुजे बयपन में पाला.”

नबी करीम सल्लल्लाहु व-सल्लम ने इरमाया —

“क्या मैं तुमको गुनाहे-कबीरामें से बडे गुनाह को ना बता दूं ? सहाबा किराम

ने अर्ज किया, जरूर बता दें अय अल्लाह के रसूल! आपने इरमाया : अल्लाह के साथ शिर्क करना और वालदैन की नाइरमानी करना और जूटी गवाही देना.”

(ईमाम बुजारी ने रिवायत किया है, इत्हुल बारी, १०/४०५)

८. ओहूलो-अकारिब से कतअ-ता'ल्लुकी :

अल्लाह त्आला का ईरशाद है —

“इ-हल असईतुम् ईन् तवल्लईतुम् अन् तुईसिद्दू ईल्-अई व-तुकत्तिउ-अर्रहामकुम्. उीला-ईकल्लजीन लअनहुमुल्लाहु इ-असम्महुम् व-अम्मा-अब्सारहुम्.” (मुहम्मद : २२-२३)

“क्या तुम लोगों से ईसके सिवा कुछ तवक्को की जा सकती है के अगर तुम उलटे मुंह फिर गये, तो जमीन में इसाद बरपा करोगे और आपस में कतअ-रहमी कर लोगे, यही लोग तो हैं, जिन पर अल्लाह ने ला'नत की है, सो ईन्हें बहरा और उनकी आंजो को अंधा कर दिया है.”

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम का ईरशाद है —

“जन्नत में रिशतों को भत्म करनेवाला शप्स नहीं जायेगा.”

(ईमाम बुजारी ने रिवायत किया है, इत्हुल बारी, १०/४१५)

मजीद ईरशाद इरमाया —

“रिशतों को जोडनेवाला वो शप्स नहीं, जो बदले में रिशते उस्तुवार करता है, बल्के हकीकी मा'नों में रीशतों को जोडनेवाला वो है, जो टूटे हुअे रीशते उस्तुवार करे.”

(ईमाम अहमद ने रिवायत किया है, सहीहुल जामेअ, हदीस नं. ५३८५) ईस लिये भाई! सिलारहमी की तरफ आगे बढ़ो, बालमी मुहब्बत व भवदत, जियारत व मुलाकात और नुसरत व मदद के जरिये ईसे इरोग दौ और कद्दे ईजारसानी पर सज्रो-तहम्मूल से काम लो, और यही हकीकी मा'नों में सिलारहमी है. अल्लाह त्आला हम सब को ईन ता'लीमात पर अमल पैरा होने की तौफिक दे.

१०. जिनाकारी :

अल्लाह त्आला का ईरशाद है —

“व-ला तद्इरबूअ-जिना- ईन्नहू कान इाहिश, व-सा-अ सबीला.”

(बनी ईसराईल : ३२)

“और जिना के करीब ली मत जाव, यकीनन् ये बडी बेहयाई है और भूरी राह है.”

नबी अकरम सल्लल्लाहु व-सल्लम का ईरशाह है —

“जब कोई बंदा जिना करता है, तो ईमान उससे नीकलकर सर के उपर सायबान की मानिंद हो जाता है और जब वो ईससे बाज आ जाता है, तो लौट आता है.”

(ईमाम अबू दाउद ने रिवायत किया है, मुलाहेजा हो : ‘सहीहुल जामेअ, उदीस नं. ५८६)

मजीद अक उदीस में ईरशाह है —

“आंभ का जिना देभना है और जभान का जिना इहश-कलामी है और हाथ का जिना पकडना है और पैर का जिना चलना है और कान का जिना सुनना है; नईस तो प्वाहीश व शहवत का ईजहार करता है और शर्मगाह उसकी तस्दीक और तकजीब करती है.”

(ईस उदीस को ईमाम बुजारी ने रिवायत की है.)

और ईस दौर में आंभो की जिनाकारी टेलीवीजन पर औरतों की उरयाँ तस्वीरें देभने से ली होती है और ईस वजह से जैसे मुशाहिद का टी-वी पर देभना ली हराम करार दिया गया है.

हर जगह के अकसरो-बेशतर टी-वी के प्रोग्राम जैसे ही मुशाहिद पर मुश्तमिल होते हैं, अल्लाह त्आला ईससे महकूज रभें.

११. लवातत और औरतों के दुबुर में मुभाशरत करना :

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम का ईरशाह है —

“अल्लाह त्आला उस शप्स को नहीं देभेगा, जो किसी मर्द से सोहबत करे या औरत के दुबुर में मुभाशरत करे.”

(ईस उदीस को ईमाम बुजारी ने रिवायत किया है, सहीहुल जामेअ, ७८०१)

१२. सूदभोरी :

अल्लाह त्आला का ईरशाह है —

“अल्लजीन यअ्कुलूनर्-रिबा ला यकूमून ईल्ला कमा यकूमुल्लजी

यतभब्बतुडुशु-शरुतानु भिनलु-मस्स.” (अकरल : २७५)

“जो लोग सूद भाते हैं तो लोग भडे ना हों सकेंगे, मगर उस शप्स के भडे होने की तरल, जैसे शैतानने धूकर भब्ती बना दिया हल.”

नभी अकरम सल्लल्लाहु अलयहल व-सल्लम का हरशाद है —

“सूदभोरी के तलतर दरजे हैं. उनमें सबसे भकीक और हलका दरजा ये है के कोर शप्स अपनी माँ के साथ जिना करे और सबसे बडा सूद मुसलमान भाई की हरुत है.”

(हरसे हाकिम ने रलवायत कलया है, सहीहुल जभेअ, हदीस नं. ३५३ॢ)

१३. अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलयहल व-सल्लम की तरक जूटी भात मनसूभ करना :

अल्लाह तूआला का हरशाद है —

“व-यल्मलु कलयाभतल तरल्लजीन कलभू अलल्लाहल वुजूहुहुम्-मुसवदह.”

(रुमर : ६०)

“और कलयाभत के हलन उन लोगों के येहरे सलयाह देभेंगें, जलन्होने अल्लाह पर जूट भोला था.”

नभी अकरम सल्लल्लाहु अलयहल व-सल्लम का हरशाद है —

“जो शप्स मेरी तरक जानभूककर जूटी भात मनसूभ करे, तो उसको जहन्नम अपना ठलकाना समज लेना थलहलये.”

(हरसे हरमाम भुभारीने रलवायत कलया है, इत्हुल बारी, १/२०१)

हलरत हसन इरमाते हैं —

“अगर अल्लाह तूआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहल व-सल्लम की तरक ऐसी जूटी भात मनसूभ की जाये, जलससे हराम हलाल हल जाये और हलाल हराम हल जाये, तो ये भललाशुभा कुक भहल है.”

१ॡ. यतीम का भाल भाना :

अल्लाह तूआला का हरशाद है —

“हरल्लजीन यअकुलून अम्वाललु-यतामा रुल्मनु हरनमा यअकुलून ही भुतूनिहलम् नारा, व-सयसूलन्न सररा.” (नलसा : १०)

“बेशक, जो लोग यतीमों का माल नाहक पाते हैं, वो बस अपने पेट में आग ही भरते हैं और अनकरीब वो दहकती हुई आग में जोंके जायेंगे।”

१५. मैदाने-जिहाद से भाग जाना :

अल्लाह त्आला का एरशाद है —

“व-मंय-युवल्लिहिम् यव्मिन् द्दुबुरहूँ एल्ला मुतहरिंल्-लिक्तालिन् अव-मुतहय्यिजन् एला इतिन् इकद् बा-अ बिगजबिम्-मिनल्लाहि व-मअ्वाहु जहन्नम.” (अन्फाल : १६)

“और जो कोई उनसे अपनी पुश्त उस रोज़ फ़रेगा, सिवाये इसके के पेंतरा बदल रहा हो लडाई के लिये या किसी दूसरी फ़ौज की तरफ़ पनाह ले रहा हो, तो वो अल्लाह के गज़ब में आ जायेगा और उसका ठिकाना जहन्नम है और वो बहुत ही बूरी जगह है।”

हालाते-हाज़रा में अफ़सोस के मुसलमान सिर्फ़ मैदाने-जिहाद ही से नहीं राहे-फ़रार एम्नियार किये हैं, बल्के जिहाद ही सबीलिल्लाह से ली मुंहु मोडे हुअे हैं; बस अल्लाह त्आला ही से अम्नो-आफ़ियत की दरप्वास्त है।

१६. हुक्मरानों की अपनी रियाया के साथ धोकेबाज़ी और जुलमो-सितम करना :

अल्लाह त्आला का एरशाद है —

“एन्नमस्-सबीलु अलल्लजीन यज़्लिमूनन्नास व-यब्गून इल-अर्दि बिगएरिल्-उक्क, उलाएक लहुम् अजाबुन् अलीम.” (शूरा : ४२)

“एल्लाम तो उन लोगों पर है, जो लोगों पर जुल्म करते हैं और उअे-जमीं पर नाहक सरकशी करते फिरते हैं, अैसों के लिये ददनाक अजाब है।”

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम का एरशाद है —

“जो शप्स उमें धोका दे वो उममें से नहीं है।”

(इसको एब्ने माज़ ने रिवायत किया है, सहीहुल ज़ामेअ, ६४०७)

नीज़ आप ने इरमाया —

“जुल्म कियामत के दिन तारिकियों की शकल में होगा.”

(ईसे ईमाम बुभारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है.)

अेक ओर उदीस में आप सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम इरमाते हैं —

“जो हुकुमरां अपनी रिआया के साथ धोकेबाज़ी का मुआमला करे, वो जहन्नमी है.”

(ईब्ने असाकिर ने रिवायत किया है, सहीहुल जामेअ, उदीस नं. २७१३)

अेक ओर उदीस में आया है —

“जो शप्स मुसलमानों के उमूर का जिम्मेदार हो और वो उनकी दोस्ती और जुड़रियात और इकरो-इके से बेनियाज़ हो गया, अल्लाह तूआला कियामत के दिन उस डाकिम की दोस्ती और हाजतों और इकरो-इके से बेनियाज़ हो जायेगा.”

(ईमाम अबू दाउद और ईब्ने माज ने रिवायत किया है, सहीहुल जामेअ, उदीस नं. ६५८५)

इयदा : आज हमारी हालत अपने आ'माल की आफ़त की वजह से ईन्तेहाई अइसोसनाक है, क्यूं के हमने अम्र-बिल-मा'इफ़ और नहि-अनिल-मुन्कर का इरीज़ा छोड दिया है. आज ईस्लामी मुल्कों की ता'दाद पैतालिस के लगभग है, जिनमें मुसलमान गैरमामूली ता'दाद में आबाद है, लेकिन हाय, अइसोस के उनकी अक्सरियत सूदी कारोबार ईन्तेहाई बेशर्मी से जाईज़ तसप्पुर करके कर रही है. शराब-नोशी और जिनाकारी के बाज़ार गर्म है, और ईसके अलावा मुफ़लिह किस्म की बेहयाईयां और बूराईयां आम है, और सबसे बढकर अइसोस ईस बात का है के बहुत कम ही लोग, ईल्ला माशाअल्लाह, मुन्करात पर नकीर करते हैं और किसी मलामत का षौफ़ किये बगैर दा'वते-दीन देते हैं.

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने इरमाया —

“जब लोग मुन्करात देभकर उस पर रोक-टोक ना करे, तो अल्लाह तूआला जल्द ही उन पर ऐसा अजाब मुसल्लत कर देगा, जो सभीको अपने लपेट में ले लेगा.”

(ईसे ईमाम अहमद ने रिवायत किया है, सहीहुल जामेअ, उदीस नं. १८७४)

૧૭. ફખ્ર વ તકબ્બુર ઓર ખુદપસંદી :

અલ્લાહ ત્આલા કા ઈરશાદ હૈ —

“ઈન્નહુ લા યુહિબ્બુલ્-મુસ્તકબિરીન.” (નહ્લ : ૨૩)

“બેશક, વો (અલ્લાહ ત્આલા) તકબ્બુર કરનેવાલોં કો પસંદ નહીં કરતા.”

જો હક્ક-ત્આલા કે સાથ તકબ્બુર કરતા હૈ, તો ઉસકા ઈમાન કુદ્ર ફાયદેમંદ ના હોગા, જિસ તરહ ઈબ્લીસ-લઈન ને ક્રિયા થા.

નબી અકરમ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ-સલ્લમ ને ફરમાયા —

“જન્નત મેં વો શખ્સ નહીં જાયેગા, જિસકે દિલ મેં જરા સા ભી કિબ્ર હોગા.”

ઈસ પર એક શખ્સ ને અર્ઝ ક્રિયા કે યા રસૂલુલ્લાહ ! હર આદમી યે પસંદ કરતા હૈ કે ઉસકે લિબાસ ઓર જૂતે અચ્છે હોં, તો રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ-સલ્લમ ને ફરમાયા —

“અલ્લાહ ત્આલા જમીલ હૈ ઓર જમાલ કો પસંદ ફરમાતા હૈ, કિબ્ર-વ-તકબ્બુર તો હક્ક સે સરકશી ઓર લોગોં કી તહકીર હૈ, યા'ની લોગોં કો ઝલીલ સમજના હૈ.”

(ઈસે ઈમામ મુસ્લિમ ને રિવાયત ક્રિયા હૈ, અન્-નવવી, ૧/૪૪૮)

ઈસી તરહ અલ્લાહ ત્આલા કા ઈરશાદ હૈ —

“વ-લા તુસઅૂરીર ખદક લિન્નાસિ વ-લા તમૂશિ ફીલ્-અદિ મરહા, ઈન્નલ્લાહ લા યુહિબ્બુ કુલ્લ મુખ્તાલિન્ ફખૂર.” (લુકમાન : ૧૮)

“ઓર લોગોં સે અપના રુખ મત ફેર, ઓર ઝમીન મેં અકડકર મત ચલ, બેશક અલ્લાહ કિસી તકબ્બુર કરનેવાલે કો ઓર ફખ્ર જતાનેવાલે કો પસંદ નહીં કરતા.”

નબી અકરમ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ-સલ્લમ સે એક હદીસે-કુદસી મેં મરવી હૈ કે અલ્લાહ ત્આલા ઈરશાદ ફરમાતા હૈં —

“અઝમત મેરા ઈઝાર હૈ, ઓર બડાઈ મેરી યાદર હૈ; જો શખ્સ ભી ઈન દોનોં સિફાત કે હુસૂલ કે લિયે મુજસે ઝઘડા યા કઝિયા કરેગા, ઈસકો મેં જહન્નમ મેં ડાલ દૂંગા.”

(ઈમામ મુસ્લિમ ને ‘કિતાબુલ-બિર’ મેં રિવાયત ક્રિયા હૈ, હદીસ નં. ૨૬૨૦)

१८. जूटी गवाही देना :

अल्लाह त्आला का ईरशाह है —

“वल्लजीन ला यशूदहूनज़-ज़ूरा.” (कुरकान : ७२)

“और वो लोग, जो बेडूदा जूटी बातों के गवाह नहीं बनते.”

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने इरमाया —

“क्या मैं तुम लोगों को कबाईर में सबसे बड़े गुनाहों को न बतला दूँ - वो ये है के अल्लाह त्आला के साथ शिर्क करना, वालटैन की नाइरमानी करना और जूटी गवाही देना.”

(ईमाम बुजारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है, इत्तुल भारी, ५/२६१)

१९. शराबनोशी :

अल्लाह त्आला का ईरशाह है —

“या-अैयुदल्लजीन आमनू- ईन्नमल्-ज्मूरु वल्-मईसिरु वल्-अन्साबु वल्-अज़्लामु रिजसुम्-मिन् अमलिश्-शईतानि इज्जतनिबुहु लअल्लकुम् तुइलिहुन.” (माईदा : ८०)

“अय ईमानवालों ! शराब और जुवा और भूत और पांसे तो बस, नरी गंदी बातें हैं, शैतान के काम हैं, सो ईनसे बचे रहो, ताके इलाह पाओ.”

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने इरमाया —

“इर नशाआवर थीज़ शराब है और इर नशाआवर थीज़ इराम है.”

(ईमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है, इदीस नं. २००३)

अेक दूसरी इदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ईरशाह इरमाते हैं —

“अल्लाह त्आला की ला'नत है शराब पर और उसके पीने और पिलानेवाले पर और इरोज़ करने और भरीदनेवाले पर और नियोणने और नियणवानेवाले पर और उठानेवाले पर और जिसके लिये उठाके ले जाई जाये उस पर और उसकी कीमत भानेवाले पर.”

(ईमाम अबू दाउद और इकिम ने रिवायत किया है, सहीहुल जामेअ, इदीस नं. ५०८१)

२०. जुवाबाजी :

अल्लाह त्आला का ईरशाह है —

“या-अैयुहल्लजीन आमनू- ईन्नमल्-भमूरु वल्-मईसिरु वल्-अन्साबु वल्-अज़्लामु रिजसुम्-मिन् अमलिश्-शईतानि इत्तनिबुहु लअल्लकुम् तुइलिहुन.” (माईदा : ८०)

“अय ईमानवालों ! शराब और जुवा और भूत और पांसे तो बस, नरी गंदी बातें हैं, शैतान के काम हैं, सो इनसे बचे रहो, ताके इलाह पाओ.”

२१. पाकदामन औरतों पर तोहमत लगाना :

अल्लाह त्आला का ईरशाह है —

“ईन्नल्लजीन यरूमनल्-मुहसनातिल्-गाइलातिल्-मुअ्मिनाति लुईनू ईद्-दुनिया वल्-आभिरति, व-लहुम् अजाबुन् अजीम.” (नूर : २३)

“जो लोग तोहमत लगाते हैं पाकदामन औरतों पर, जो बेजबर् हैं, ईमानवालिंयां हैं, उन पर ला'नत है दुनिया और आभिरत में, और उनके लिये सप्त अजाब रप्पा हुआ है.”

‘कज़फ़’ (तोहमत) के मा'नी ये है के कोई शप्स किसी औरत या पाकदामन शरीफ़ औरत के मुताब्लिक ये कहे के वो जिनाकार है या ईसी जैसे नामुनासिब अक्काज ईस्तेमाल करे, वल्लाहु अज़्लम.

२२. माले-गनीमत में पियानत करना :

बैतुल-माल और जकात के अम्वाल से बगैर किसी ईस्तेहकाक के किसी चीज़ के ले लेने को ईस्लाम में गलूल (इज्म कर जाना) कहते हैं. ईसी तरह से किसीने माले-गनीमत की तकसीम से कब्ल कोई चीज़ ले ली, या ईमामे मुस्लिमीन की ईज्जत के बगैर बैतुल-माल या जकात की रकम से, जो हुकरा व मसाकीन के लिये मप्सूस है, उनमें से कोई चीज़ छसिल कर ली, तो वो क्रियामत के दिन उसे अपनी गरदन पर लाटे हुवे छजिर होगा. ईसी के मुताब्लिक अल्लाह त्आला का ईरशाह है —

“व-मंय्-यगूलूल यअूति बिमा गल्ल यम्मल्-क्रियामति.”

(आले ईमरान : १६१)

“और जो कोई भियानत करेगा, वो क्रियामत के दिन अपनी भियानत की छुई थीक को छजिर करेगा.”

२३. योरी करना :

अल्लाह त्आला का ईरशाह है —

“वस्-सारिकु वस्-सारिकतु इक़तउ- अयूदियहुमा जऊ-अम् बिमा कसब नकालम्-मिनल्लाह, व-ल्लाहु अज़ीज़ुन्-हकीम.” (माईदा : ३८)

“योरी करनेवाला मर्द और योरी करनेवाली औरत, दोनों के हाथ काट डालो उनके करतूतो के अवज, अल्लाह की तरफ़ से ईब्रतनाक सजा के तौर पर, और अल्लाह बडा कुव्वतवाला और दाना-व-बीना है.”

२४. राहजनी करना :

राहजनी या'नी लोगों के मालो-दौलत योरी करना, जबरदस्ती लूटना और उनकी ईज़्जतो-आबरू को पामाल करना, जब के वो छालते-सफ़र में छों और उन्हें मजबूर करके थीकों को छसिल करना है. अल्लाह त्आला का ईरशाह है—

“ईन्नमा जऊ-उल्लज़ीना युछारिबूनल्लाह व-रसूलहू व-यसूिन झिल-अईद इसाहन् अयू-युक्तलू- अव् युसल्लबू- अव् तुक्तअ अईदीछिम् व-अर्जुलुहुम्-मिन् भिलाझिन् अव् युन्फ़व् मिनल्-अईद, जालिक लहुम् भिजयुन् झीद्-दुनिया व-लहुम् झील्-आभिरति अजाबुन् अजीम.” (माईदा : ३३)

“जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से लडते छें और जमीन में इसाह झैलाने में लगे रहते छें, उनकी सजा बस यही है के वो कत्ल किये जायें या सूली दिये जायें, या वो मुल्क से निकाल दिये जायें; ये तो उनकी रुस्वाई दुनिया में छुई और आभिरत में उनके लिये बडा अजाब है.”

२५. जूटी कसम खाना :

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ईरशाह इरमाते छें —

“जिस शप्स ने जूटी कसम ईस लिये भाई के किसी मुसलमान भाई का माल अँठ ले, तो वो (क्रियामत में) अल्लाह त्आला से अैसे छाल में मुलाकात करेगा के अल्लाह उससे नाराज छोगा.”

(ईमाम बुखारी ने रिवायत किया है, मुलाहेजा छो : इत्हुल बारी, ८/२१३)

એક દ્વિતીય હદીસ મેં ઈરશાદ ફરમાતેં હેં —

“ગુનાહે-કબીરા યે ચીઝેં હેં : અલ્લાહ ત્આલા કે સાથ શિર્ક કરના, ઓર વાલેદૈન કી નાફરમાની કરના, ઓર કિસી નફ્સ કો કત્લ કરના, ઓર જૂટી કસમ ખાના.”

(ઈમામ બુખારી ને રિવાયત કિયા હે, મુલાહેઝા હો : ફત્હુલ બારી, ૧૧/૫૫૫)

૨૬. ઝુલ્મો-સિતમ કરના :

ઝુલ્મ લોગોં કે અમ્વાલ કો નાજાઈઝ ઓર ઝાલિમાના તરીકે સે હાસિલ કરને સે હોતા હે ઓર લોગોં કે સાથ ગાલી-ગલોજ કરને ઓર મારને-પીટને ઓર કમઝોરોં કે સાથ ઝયાદતી વગૈરહ સે હોતા હે. ઈન સબી સૂરતોં સે ઝુલ્મો-સિતમ હોતા હે.

અલ્લાહ ત્આલા કા ઈરશાદ હે —

“વ-સયઅલમુલ્લઝીન ઝલમૂ-અય્ય મુ-કલબિય્-યન્કલિબૂન.”

(શૂઅરા : ૨૨૭)

“ઓર અન્કરીબ ઉન લોગોં કો મા'લૂમ હો જાયેગા, જિન્હોં ને ઝુલ્મ કર રખા હે કે કેસી જગહ ઉનકો લોટકર જાના હે.”

નબી અકરમ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ-સલ્લમ કા ઈરશાદ હે —

“ઝુલ્મો-સિતમ કરને સે ઈજ્તિનાબ કરો, ઈસ લિયે કે ઝુલ્મ કિયામત કે દિન તારીકી હી તારીકી હોગા.” (ઈમામ મુસ્લિમ ને રિવાયત કિયા હે.)

૨૭. ઝાલિમાના ટેક્ષ વુસૂલ કરના :

ઈસ તરહ કી રકમ વુસૂલ કરનેવાલા ડાકૂઓં સે મુશાબેહ હોતા હે, કયૂં કે ઈસમેં લોગોં પર ઝબરદસ્તી ટેક્ષ મુસલ્લત કિયા જાતા હે ઓર ટેક્ષ કા લગાનેવાલા ઓર ઉસકી વુસૂલયાબી કરનેવાલા ઓર ઉસકા લિખનેવાલા, સબકે સબ ઈસ જુર્મ મેં શરીક હેં, સબ હરામખોરી કરનેવાલેં હેં, ઓર વુસૂલયાબી કરનેવાલા ઈસ ઝાલિમાના અમલ મેં સબસે બડા મદદગાર હોતા હે, બલ્કે વો બરાહેરાસ્ત ખુદ ઝાલિમ હોતા હે.

અલ્લાહ ત્આલા કા ઈરશાદ હે —

“ઈન્નમસ-સબીલુ અલલ્લઝીન યઝ્લિમૂનન્નાસ વ-યબ્ગૂન ફીલ-અદિ બિ-ગઈરિલ્ હક્ક, ઊલાઈક લહુમ્ અઝાબુન્ અલીમ.” (શૂરા : ૪૨)

“ईलाम तो उन लोगों पर है, जो लोगों पर जुल्म करते और जमीन में नाहक सरकशी करते फिरते हैं, जैसे के लिये दईनाक अजाब है.”

अक दई नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने लोगों से दरयाईत इरमाया के, “क्या तुम लोग जानते हो, मुईलिस कौन है?” लोगों ने अई किया के, “जिसके पास मालो-मताअ ना हो.” आपने ईरशाद इरमाया, “उकीकी मा'नों में मेरी उम्मत में मुईलिस वो शप्स है, जो कियामत के रोज नमाज, रोजा, जकात वगैरह लेकर हाजिर होगा, और ऐसी हालत में हाजिर होगा के किसी को दुनिया में गावी दी होगी, किसी को तोहमत लगाई होगी, किसी का माल हजम कर लिया होगा, किसी की भूरेजी की होगी, या किसी को नाहक मारा-पीटा होगा, तो जिस शप्स को मसलन, उसने गावी दी होगी उसे उसकी नेकीयां दे दी जायेगी और दूसरे को मसलन, जिसको उसने मारा-पीटा था उसको भी उसकी नेकीयां दे दी जायेगी, ईर अगर मजालिम के अदा होने से पेहले जो उस पर है, इसकी नेकीयां भतूम हो गई, तो इन मजूलूमों के गुनाह उस जालिम के सर पर डाल दिये जायेंगे, ईर उसको जहन्नम में ईंक दिया जायेगा.”

२८. हरामखोरी करना और माल के हुसूल के लिये जाईज-व-नाजाईज की तमीज ना करना :

अल्लाह त्आला का ईरशाद है —

“व-ला तअकुलू- अम्वालकुम् बईनकुम् बिल्-बातिल.” (अकरह: १८८)

“और आपस में अक-दूसरे का माल नाजाईज तौर पर मत पाव.”

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ईरशाद इरमाते हैं —

“अक शप्स जो लंबा सईर करता है, परागन्दा हाल, गई-आलूद, अपने हाथों को आसमान की तरई उठाकर कइता है के अय मेरे रब! अय मेरे रब! (या'नी गिडगिडाकर हुआ करता है), हालांके उसका जाना हराम है, पीना हराम है, और उसका पहनना हराम है, और हराम माल ही से उसकी परवरिश हुई है, तो उसकी हुआ किस तरह कुबूल होगी?”

(ईमाम अहमद और मुस्लिम और तिरमिजी ने रिवायत किया है, मुलाहेजा हो : सहीहुल जामेअ, २७४४)

२८. ખુદકુશી કરના :

અલ્લાહ ત્આલા કા ઈરશાદ હૈ —

“વ-લા તક્તુલૂ-અન્હુસકુમ્, ઈન્નલ્લાહ કાન બિકુમ્ રહીમા. વમંય્-યક્અલ્ જાલિક ઉદ્વાનંવ્-વ-જુલ્મન્ ફ-સલ્ફ નુસ્લીહિ નારા, વ-કાન જાલિક અલલ્લાહિ યસીરા.” (નિસા : ૨૮-૩૦)

“ઔર અપની જાનોં કો મત કતલ કરો, બેશક અલ્લાહ તુમ્હારે હક્ક મેં બડા મેહરબાન હૈ, ઔર જો કોઈ ઐસા કરેગા સરકશી ઔર જુલ્મ કી રાહ સે, તો હમ અન્કરીબ ઉસકો આગ મેં ડાલ દેંગેં ઔર યે અલ્લાહ કે લિયે આસાન હૈ.”

નબી અકરમ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ-સલ્લમ કા ઈરશાદ હૈ —

“જિસને લોહે કી કિસી ચીઝ સે ખુદકુશી કર લી, તો વો જહન્નમ કી આગ મેં ઉસી લોહે કે ઝરિયે હંમેશા-હંમેશ અપને પેટ કો ઝખ્મી કરતા રહેગા, ઔર જિસને ઝહર પીકર ખુદકુશી કર લી, વો જહન્નમ કી આગ મેં હંમેશા-હંમેશ અપને હાથ સે ઝહર ખાતા રહેગા, ઔર જિસને પહાડ સે છલાંગ લગાકર ખુદકુશી કર લી, તો વો દોઝખ કી આગ મેં હંમેશા છલાંગ લગાતા રહેગા.”

(ઈમામ મુસ્લિમ ને ઈસકી રિવાયત કી હૈ, મુલાહેઝા હો : અન્-નવવી, ૧/૫૭૭)

૩૦. દરોગગોઈ (જૂટ) કા આદી હોના :

નબી અકરમ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ-સલ્લમ ને ફરમાયા —

“જૂટ બૂરાઈયોં કી તરફ લે જાતા હૈ ઔર બૂરાઈયાં જહન્નમ તક પહુંચા દેતી હેં, ઔર આદમી બરાબર જૂટ બોલતા રહતા હૈ, હતા કે અલ્લાહ ત્આલા કે યહાં જૂટા લિખ દિયા જાતા હૈ.”

(ઈમામ બુખારી ઔર મુસ્લિમ ને રિવાયત કિયા હૈ, મુલાહેઝા હો : ફત્હુલ બારી, ૧૦/૫૦૭)

અલ્લાહ ત્આલા કા ઈરશાદ હૈ —

“ફ-નજૂઅલલ્-લઅનતલ્લાહિ અલલ્-કાઝિબીન.” (આલે ઈમરાન : ૬૧)

“ઔર જૂટોં પર અલ્લાહ કી લા'નત ભેજેં.”

39. ઇસ્લામી ક્વાનીન કે ખિલાફ ફૈસલા કરના :

અલ્લાહ ત્આલા કા ઇરશાદ હૈ —

“વ-મંલ્લમ્ યહુકુમ્ બિમા-અન્નલલ્લાહુ ફ-ઊલાઈક હુમુલ્-કાફિરૂન.”

(માઈદા : ૪૪)

“ઔર જો કોઈ અલ્લાહ કે નાઝિલ કિયે હુએ (અહકામ) કે મુતાબિક ફૈસલા ન કરે, તો યહી લોગ તો કાફિર હૈ.”

“વ-મંલ્લમ્ યહુકુમ્ બિમા-અન્નલલ્લાહુ ફ-ઊલાઈક હુમુલ્-ઝાલિમૂન.”

(માઈદા : ૪૫)

“ઔર જો કોઈ અલ્લાહ કે નાઝિલ કિયે હુએ (અહકામ) કે મુતાબિક ફૈસલા ન કરે, તો એસે હી લોગ તો ઝાલિમ હૈ.”

“વ-મંલ્લમ્ યહુકુમ્ બિમા-અન્નલલ્લાહુ ફ-ઊલાઈક હુમુલ્-ફાસિકૂન.”

(માઈદા : ૪૪)

“ઔર જો કોઈ અલ્લાહ કે નાઝિલ કિયે હુએ (અહકામ) કે મુતાબિક ફૈસલા ન કરે, તો એસે હી લોગ તો ફાસિક હૈ.”

32. ફૈસલા કરને પર રિશ્વત લેના :

અલ્લાહ ત્આલા કા ઇરશાદ હૈ —

“વ-લા તઅકુલૂ-અમ્વાલકુમ્ બઈનકુમ્ બિલ-બાતિલિ વ-તુદ્લૂ બિહા-ઈલલ્-હુક્કામિ લિ-તઅકુલૂ ફરીકમ્-મિન્ અમ્વાલિનાસિ બિલ્-ઈસ્મિ વ-અન્તુમ્ તઅમલુન.” (બકરહ : ૧૮૮)

“ઔર આપસ મેં એક-દૂસરે કા માલ નાજાઈઝ તૌર પર મત ખાવ ઔર ના ઇસે હુક્કામ તક પહુંચાવ, ઇસ ગર્ઝ સે કે તુમ્હેં લોગોં કે માલ કા એક હિસ્સા ઝાલિમાના તરીકે સે ખાને કા મૌકા મિલે, દરાં-હાલ-યે કે તુમ જાન રહે હો.”

હદીસ મેં હૈ કે અલ્લાહ ત્આલા ને રિશ્વત લેને ઔર દેનેવાલે પર લા'નત કી હૈ.

નીઝ આપને ઇરશાદ ફરમાયા —

“જિસને કિસીકે લિયે સિફારીશ કી, ફિર ઉસકી વજહ સે ઇસે કોઈ હદ્યા

दिया गया, और उसने उसको कुबूल कर लिया, तो उसने सूद के अंक बडे दरवाजे में घूसने का ईर्तिकाम किया।”

(ईमाम अहमद ने रिवायत किया है, मुलाहेजा हो : सहीहुल जामेअ, हदीस नं. ६३१६)

३३. औरतों और मर्दों का बाहमी तश्बीहा ईश्रियार करना :

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने इरमाया —

“अल्लाह त्आला ने उन औरतों पर, जो मर्दों से मुशाबहत ईश्रियार करती हैं और उन मर्दों पर जो औरतों से मुशाबहत करते हैं, ला'नत इरमाई है।”

(ईमाम अहमद वगैरह ने रिवायत की है, मुलाहेजा हो : सहीहुल जामेअ, ५१००)

३४. दय्युस सिफ्त (बेशरम, नईफ्ट) होना :

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने इरमाया —

“तीन तरह के आहमीयों पर अल्लाह त्आला ने जन्नत हराम कर दी है : शराबनोशी करनेवाला, वालदैन की नाइरमानी करनेवाला और वो दय्युस (बेशरम) शप्स जो अपने ओहले-भाना के साथ बेहयाई किये जाने को भरदाश्त करता है।”

(ईमाम अहमद ने रिवायत किया है, मुलाहेजा हो : सहीहुल जामेअ, ३०५२)

दय्युस : उस शप्स को कहते हैं, जो अपनी बीवी के साथ बेहयाई व जिनाकारी वगैरह (नगिज़ुबिल्लाह) को जानते या देखते हुअे भी जामोश रहे या उसे रोशन प्याली समजे - वल्लाह आ'लम.

३५. हलाला करना और करवाना :

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने इरमाया —

“हलाला करनेवालों और करानेवालों पर अल्लाह की ला'नत है।”

(ईमाम अहमद ने रिवायत किया है, मुलाहेजा हो : सहीहुल जामेअ, ५१०१)

हलाला की सूरतेहाल उस वक्त पेश आती है, जब कोई शप्स अपनी बीवी को तीन तलाक दे दे, युनांये वो अपनी बीवी को दोबारा उस वक्त तक हासिल

नहीं कर सकता, जब तक वो औरत किसी दूसरे मुसलमान से निकाह ना कर ले, फिर वो शप्स अपनी मरजी से उसे शरई तलाक दे दे, उसके बाद वो औरत अपने साबेका शौहर के पास नया निकाह करके वापस आ सकती है.

और मोहल्लिल (हलाल करनेवाला) वो है, जो किसी औरत से ज़ाहिरी तौर पर निकाह करता है, ताके साबेका शौहर के लिये उसकी बीवी हलाल हो जाये.
- वल्लाह आ'लम.

उ६. पेशाब से तहारत हासिल ना करना :

ये ईसाईयों की आदत है. हजरत ईब्ने अब्बास रदिएल्लाहु अन्हो से रिवायत है के नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व-सल्लम ने अक दफा दो कब्रों के पास से गुजरते हुअे इरमाया —

“उन दोनों कब्रवालों पर अजाब हो रहा है और ये अजाब किसी बड़ी चीज की वजह से नहीं हो रहा है (अक रिवायत के मुताबिक इरमाया, बल्के वो बड़ी चीज है) उनमें अक कब्रवाला तो पेशाब से नहीं बचता था और दूसरा शप्स युगलभोरी किया करता था.”

(ईमाम बुखारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है, मुलाहेजा हो : अल-इत्ह, १०/४७२)

जो शप्स पेशाब से अपने जिस्म और कपड़ों को महफूज नहीं रखता, वो नजस रहता है, हालांके अल्लाह त्आला का हुक्म है —

“व-सियाबक इतहिहर.” (मुदस्सिर : ४)

“और अपने कपड़ों को पाक रखें.”

ईस लिये मुसलमान भाईयों को मज़कूरा वाकेआ से इब्रत व सबक हासिल करना चाहिये और अपने जिस्म और कपड़ों को पेशाब वगैरह की नजसत से बचाना चाहिये और अगर लग जाये तो झैरन् उससे पाकी हासिल करना चाहिये. अल्लाह त्आला अपने इजल-व-करम से ईस बला से महफूज रखे. वो बडा रहम करनेवाला है.

उ७. जानवर के येहरे को दागना :

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व-सल्लम का ईरशाह है —

“क्या तुमको इसका इल्म नहीं है के मैंने हर उस शप्स पर ला'नत भेज है, जो किसी जानवर के येहरे को दागे या उसे येहरे पर मारे.”

(इमाम अबू दाउद ने रिवायत किया है, मुलाहेजा हो : सहीहुल जमेअ, १३२६)

३८. दुनिया के लिये इल्म हासिल करना और इल्म का छुपाना :

अल्लाह तआला का इरशाद है —

“इल्लल्लजीन यक्तुमून मा- अन्ल्ला मिनल् बय्यिनाति वल्-हुदा मिम्- बअदि मा बय्यत्राहु लित्रासि झील्-किताब , उलाइक यल्अनुहुमुल्लाहु व- यल्अनुहुमुल्-लाइनून. इल्लल्लजीन ताबू व-अस्लहु व-बय्यनू इ-उलाइक अतूबु अलइहिम्, व-अनत्-तव्वाबुर्-रहीम.” (अकरह : १५०-१६०)

“बेशक, जो लोग छुपाते हैं उस चीज को जो के हम जुली हुई निशानीयों और छिदायत के तौर पर नाजिल कर यूके हैं, बाद इसके के हम इसे लोगों के लिये किताब में बयान कर यूके हैं, यही लोग है जिन पर अल्लाह ला'नत करता है और ला'नत करनेवाले ला'नत करते हैं. अलबत्ता, जो लोग तौबा कर लें और अपने तर्ज-अमल को दुरस्त और जाहिर कर दें, ये वो लोग हैं जिसको मैं मुआफ़ कर दूंगा और मैं बडा तौबा कबूल करनेवाला, बडा रहमवाला हुं.”

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने इरमाया —

“जिस शप्स ने इल्मे-दीन इस लिये हासिल किया, ताके बहसो-मुबाहिसा करे नादानों से, या इफ़्र करे आलिमों पर, या लोगों को अपनी तरफ़ मुतवज्जह करे, अल्लाह उसको जहन्नम में दाखिल करेगा.”

(इमाम इब्ने माजह ने रिवायत किया है, मुलाहेजा हो : सहीहुल जमेअ, उदीस नं. ६१५८)

दूसरी उदीस में आप का इरशाद है —

“जिसने इल्म को, जिससे अल्लाह की रजामंदी हासिल होती है, दुनिया की गर्ज से सीखा, कियामत के दिन उसको जन्नत की बू ली ना मिलेगी.”

(इमाम अबू दाउद ने रिवायत किया है, मुलाहेजा हो : सहीहुल जमेअ, उदीस नं. ६१५८)

39. ખિયાનત કરના :

અલ્લાહ ત્આલા કા ઈરશાદ હૈ —

“યા ઐયુહલ્લઝીના આમનૂ ! લા તખૂનૂલ્લાહ વર-રસૂલ વ-તખૂનૂ-અમાનાતિકુમ્ વ-અન્તુમ્ તઅલમૂન.” (અન્ફાલ : ૨૭)

“અય ઈમાનવાલોં ! ખિયાનત ના કરો અલ્લાહ ઓર ઉસકે રસૂલ કે સાથ ઓર ના અપની અમાનતોં મેં ખિયાનત કરો, દરાં-હાલ-યે કે તુમ જાનતે હો.”

નબી અકરમ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ-સલ્લમ કા ઈરશાદ હૈ —

“જિસમેં અમાનતદારી નહીં, વો ઈમાનદાર નહીં ઓર જિસમેં વફાદારી નહીં, વો દીનદાર નહીં.”

(ઈમામ અહમદ ઓર ઈબ્ને હિબ્બાન ને રિવાયત કિયા હૈ, મુલાહેઝા હો : સહીહુલ જામેઅ, હદીસ નં. ૭૧૭૮)

નબી અકરમ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ-સલ્લમ કા ઈરશાદ હૈ —

“જિસમેં યે ચાર સિફાત પાઈ જાયેં વો પક્કા મુનાફિક હોગા, ઓર જિસ શખ્સ મેં ઈનમેં સે કોઈ એક સિફત હો તો ઉસમેં નિફાક કી એક સિફત હોગી, યહાં તક કે ઉસે છોડ દે. ઈન ચાર સિફાત મેં સે એક સિફત આપને યે બયાન ફરમાઈ કે જબ ઉસકે પાસ અમાનત રખી જાયે તો ઉસમેં ખિયાનત કરે.”

(ઈમામ બુખારી ઓર મુસ્લિમ ને રિવાયત કિયા હૈ.)

૪૦. એહસાન જતલાના :

અલ્લાહ ત્આલા કા ઈરશાદ હૈ —

“યા ઐયુહલ્લઝીન આમનૂ ! લા તુબ્તિલૂ સદકાતિકુમ્ બિલ્-મન્નિ વલ્-અઝા.”

(બકરહ : ૨૬૪)

“અય ઈમાનવાલોં ! અપને સદકાત કો એહસાન જતા કર ઓર અઝિયત પહુંચાકર બાતિલ ના કરો.”

નબી અકરમ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ-સલ્લમ કા ઈરશાદ હૈ —

“અલ્લાહ ત્આલા કિયામત કે દિન તીન તરહ કે લોગોં સે ના તો બાત કરેગા ઓર ના ઉન્હેં દેખેગા ઓર ના હી ઉન્હેં (ગુનાહોં સે) પાક-સાફ કરેગા ઓર

मजीद-बरां, जैसे लोग दर्दनाक अजाब से दियार लोंगें. (पहला) वो शप्स जो टपने से नीचे कपडे पहने, (दूसरा) वो शप्स जो अहसान जतलाकर किसी को कुछ दे, (तीसरा) वो शप्स जो जूटी कसम पाकर अपना माल इरोफ्त करे.”

(ईमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है.)

४१. कजा-व-कद्र का ईन्कार करना :

अल्लाह त्आला का ईरशाद है —

“ईन्ना कुल्ल शय्ईन् फलकनाहु बि-कदर.” (कमर : ४८)

“हमने हर चीज को (अक पास) अंदाजे से पैदा किया है.”

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने इरमाया —

“वालेदैन की नाइरमानी करनेवाला और तकदीर का ईन्कार करनेवाला और शराबनोशी करनेवाला जन्नत में दाखिल नहीं होगा.”

(किताबुस-सुन्नह में शैफ अल्बानी ने इस हदीस को इसन करार दिया है, दैफिये : हदीस नं. ३२१)

४२. तजस्सुस करना :

अल्लाह त्आला का ईरशाद है —

“व-ला तजस्सुस.” (हुजुरात : १२)

“और तजस्सुस ना किया करो.”

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम का ईरशाद है —

“जो शप्स (युपके थोरी) लोगों की बातों को सुने, जिनका सुनना वो पसंद ना करते हों, तो उसके कान में (कियामत के दिन) सीसा डाला जायेगा, और जिसने जूटा प्वाब भयान किया उससे (आभिरत में) जव में गिरह डालने को कडा जायेगा.”

(ईसे तबरानी ने रिवायत किया है, सहीहुल जामेअ, हदीस नं. ६०२८)

४३. युगलभोरी करना :

अल्लाह त्आला का ईरशाद है —

“व-ला तुतिअ कुल्ल उल्लाकिम्-मडीन, उम्माजिम्-मशाईम् बि-नमीम.”

(कलम : १०-११)

“और आप जैसे शप्स का भी कहना ना मानियेगा, जो बडी कसमें जानेवाला है, जलील है, ता'नाभाज है, युगलपूरी करते फिरता है.”

‘नमाम’ उसे कहते है, जो इसाद फैलाने की गर्ज से लोगों के माबैन धर की भातें उधर करे.

उजरत धन्ने अब्बास रदिकल्लाहु अन्धो से मरवी है के नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने अक बार कब्रों के पास से गुजरते हुअे फरमाया —

“धन दोनों पर अजाब हो रहा है और ये अजाब बजाहिर किसी बडी चीज की वजह से नहीं हो रहा है (हालां के वो बडी चीज है) उनमें अक (कब्रवाले को धस लिये अजाब हो रहा है के वो) लोगों के दरमियान युगलपूरी किया करता था.”

(धमाम बुभारी ने रिवायत किया है, मुलाहेजा हो : इत्तुल बारी, १०/४७२)

४४. ला'न व ता'न करना :

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम का धरशाद है —

“मुसलमान को गाली देना फिस्क है और उससे जंग करना कुफ है.”

(धसे धमाम बुभारी ने रिवायत किया है, मुलाहेजा हो : इत्तुल बारी, १/११०)

नीज आपने फरमाया —

“जब कोई बंदा किसी पर ला'नत भेजता है, तो वो ला'नत आसमान की तरफ जाती है, युनांये आसमान के दरवाजे उस पर बंद हो जाते है, फिर वो जमीन की जानिब वापस आने लगती है, तो उसके भी दरवाजे बंद कर दिये जाते हैं, फिर वो दायें-बांये गरदिश करती रहती है और जब उसे कोई मुस्तकर नहीं मिलता, तो वो ला'नत किये जानेवाले की जानिब लौट जाती है, अगर वो उसका मुस्तलिक होता है; वरना ला'नत करनेवाले ही के उपर मुसल्लत हो जाती है.”

(धसे धमाम अबू दाउद ने रिवायत किया है, मुलाहेजा हो : १६७२)

अय मेरे भाई ! आपको ये ज्ञान लेना चाहिये के तमाम मुसलमानों का ईस पर
 ईजमाअ है के किसी मुसलमान पर ला'नत भेजना हराम है, प्वाह कैसे भी
 हालात पैदा हो जाये; हां, उमूमी तौर पर बूरे अप्लाक व सिफातवालों पर
 ला'नत की जा सकती है; जैसे कोई ये कहे - लअनल्लाह अज़्-जालिमीन,
 लअनल्लाह अल-काफ़िरीन, लअनल्लाह अल-मुसव्विरीन. (जालिमों पर
 अल्लाह की ला'नत हो, काफ़िरो पर अल्लाह की ला'नत हो, तस्वीर बनानेवालों
 पर अल्लाह की ला'नत हो.)

४५. गदारी और बेवफ़ाई करना :

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने फ़रमाया —

“जिस शप्स में यार तरह की सिफ़ात पाई जाये, वो पक्का मुनाफ़िक़ होगा
 और जिस में इनमें से कोई एक सिफ़त मौजूद हो तो वो निफ़ाक़ की एक सिफ़त
 का हामिल समजा जायेगा, यहाँ तक के उसे छोड़ दे. जब उसके पास अमानत
 रभी जाये तो उसमें भियानत करे, और गुफ़्तगू करे तो जूट बोले, और जब
 वा'दा करे तो उसकी भिलाफ़वर्जी करे, और जब ज़घडा करे तो गाली-गलूज
 करने लगे.”

(ईमाम बुखारी ने रिवायत किया है, मुलाहेज़ा हो : इत्तुल बारी, १/८८)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम का ईरशाह है —

“हर गदार शप्स के साथ कियामत के दिन एक जंडा होगा (जो उसके ब-कदूर
 उज़र छोटा व बडा होगा) और कान फ़ोलकर सुन लो - अभीरुल मु'मेनीन के
 भिलाफ़ अलमे-गदूर बलंद करने से बूरी कोई गदारी नहीं है.”

(ईमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है, मुलाहेज़ा हो : सहीहुल ज़ामेअ, हदीस
 नं. १५७०)

४६. काहिनों और नजूमीयों की तस्दीक़ करना :

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने फ़रमाया —

“जो शप्स किसी नजूमी और काहिन के पास जाये और उसकी बात तस्दीक़
 करे, तो उसने शरीअते-मुहम्मदिया का ई-कार कर दिया.”

नीज़, नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने फ़रमाया —

“जिस शप्स ने किसी नजूमी के पास जाकर कुछ पूछा, तो उसकी यादीस रातों की नमाज कुबूल नहीं होगी.” (ईमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है.)

४७. शौहर की नाहरमानी करना :

अल्लाह तआला का ईरशाह है —

“वल्लाती तभाइन नुशूजुन्न इ-ईजूजुन्न वल्जूरुजुन्न डील्-मजाजिह वदरिबूजुन्न, इईन् अतअनकुम् इ-ला तब्गू अलईहिन्न सभीला. ईन्नल्लाह कान अलियन् कबीरा.” (निसा : ३४)

“और जिन औरतों से तुम्हें सरकशी का अंदेशा हो, तो उन्हें नसीहत करो और उन्हें ज्वाबगाहों में तन्हा छोड दो और उन्हें मारो, फिर अगर वो तुम्हारी ईताअत करने लगे, तो उनके जिलाइ बडाने ना हूँगे. बेशक, अल्लाह बडा रइअतवाला है, बडा अजमतवाला है.”

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने इरमाया —

“जब कोई मर्द अपनी बीवी को डमबिस्तरी के लिये बुलाए और वो ईन्कार कर दे और मर्द नाराज होकर शब गुजारे, तो इरिशते उस औरत पर सुब्ह तक ला'नत (भेजते रहते हैं).”

(ईमाम बुखारी ने रिवायत किया है, मुलाहेजा हो : इत्हुल बारी, ६/३१४)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने इरमाया —

“अगर मैं किसीको गैरुल्लाह के सजदे का हुक्म देता, तो औरत को हुक्म देता के वो अपने शौहर को सजदा करे, कसम है उस जाते-पाक की जिसके डाय में मेरी जान है, औरत अपने परवरदिगार के हुक्क की अदायगी से उस वक्त तक इरिग नहीं हो सकती, जब तक के अपने शौहर के तमाम हुक्क की अंजामदही ना करे, डत्ता के अगर शौहर उसे बुलाए और ये कुजावड (गिंट की पीठ) पर है तब भी ईन्कार ना करे.”

(ईमाम अहमद ने रिवायत किया है, मुलाहेजा हो : सहीहुल जामेअ, डदीस नं. ५२८५)

ईसी तरड अेक दूसरी डदीस में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम का ईरशाह है —

“अल्लाह तूआला उस औरत की तरफ़ नहीं टेंभेगा, जो अपने शौहर की शुक्गुजार नहीं छोती, हालां के वो उससे मुस्तग्नी नहीं हो सकती है.”

(मुलाहेजा हो : ‘सिलसिलतुल अहादीस अस्-सहीहा, २८८)

ईस लिये हर मुसलमान भातून के लिये जरूरी है के वो अपने शौहर की पुश्नूदी हासिल करने की हर मुमकिन कोशिश करे और उसकी नाराजगी के अस्बाब से गुरेज करे, और किसी शरई व फ़ितरी अम्ज़ार, जैसे हैज व निफ़ास और रोज़ों के अय्याम में ना छोते हुअे शौहर की प्वालिशात को पूरी करने दे, और हुंमेशा शर्म-व-हया के जेवर से आरास्ता रहे और शौहर की ईताअत और इरमाबदारी करे और उसकी नाराजगी से बचने को मताअे-हयात समजे.

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने इरमाया —

“अगर औरत (सहीह मा’नों में) शौहर के हुकूक से वाकिफ़ हो तो उसके दिन-व-रात के जानेकी तैयारी से उस वक्त तक ना बेठेगी, जब तक वो उससे इरिग ना हो जाये.”

(ईसे तबरानी ने रिवायत किया है, मुलाहेजा हो : सहीहुल जामेअ, ५२८५) हररत आईशा रदिएल्लाहु अन्हा इरमाती हैं के, “अय औरतों! तुम्हें अपने-अपने शौहरों के हुकूक का सहीह अंदाजा हो जाये, तो तुममें की हर औरत अपने येडरे की गाल से शौहर के कदमों के गदों-गुबार साइ करेगी.”

ईसी तरह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने इरमाया —

“मैंने जन्नत में जांका तो ईसमें अकसरियत इकरा की नजर आई और जहन्नम में नजर डाली तो अकसरियत औरतों की दिजाई दी.”

(ईमाम अहमद ने रिवायत किया है, सहीहुल जामेअ, १०३१)

ईमाम जहबी ईस हदीस पर तब्सरा करते हुअे लिखते हैं के, “औरतों के ईस कसरत से जहन्नम में जाने की वजह ये है के वो अल्लाह तूआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम और अपने शौहरों की इरमाबदारी में कोताही करती है, और अकसरत बेपर्दगी में मुलव्विस छोती हैं; और बेपर्दगी के मा’नी ये है के जब बाहर नीकलने का ईरादा करती है तो अक्छे लिबास जैबतन करती है और अक्छी तरह बनाव-सिंगार करके हुस्नो-जमाल का दिजावा (मजाहेरा) करते हुअे नीकलती है और लोगों को इत्ने में डालती हैं और अगर वो महकूज रहे और लोगों की हवस का शिकार ना हुई तो लोग उनकी

तरफ़ बढगुमानी करके गुनाहों से मलफ़ूज़ ना रह सकें.”

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने फ़रमाया —

“औरत परदे में रहनेवाली शय है, जब वो बाहर नीकल जाती है तो शैतान उसे ताकने लगता है.”

(ईमाम तिरमिज़ी ने रिवायत किया है, मुलाहेज़ा हो : सहीहुल ज़ामेअ, हदीस नं. ६६८०)

ईमाम ज़हबी रहमतुल्लाहु अलयहि फ़रमाते हैं के, “औरत जब अपने घर के अंदर होती है, तो अल्लाह तूआला के नज़दीक अज़ीमुश्शान होती है, औरत के लिये रज़ाअ-ईलाही के हुसूल का सबसे बेहतरीन तरीका ये है के वो चिरागे-पाना रहे और शौहर की ईताअत करे और अल्लाह तूआला की ईबाहत करे.” (मुलाहेज़ा हो : किताबुल क़बाईर अज़-ज़हबी, स. १७६)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम का ईरशाह है —

“औरत परदे में रहनेवाली थीज़ है और जब वो अपने घर से बाहर नीकल जाती है, तो शैतान उसे ताकने लगता है, डालांके वो अपने घर की कोठरी में रहते हुअे अल्लाह तूआला से करीबतरीन रहती है.”

(ईमाम तबरानी ने रिवायत किया है, मुलाहेज़ा हो : सहीहुत्-तरगीब, ३४२)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने फ़रमाया —

“मैंने अपने बाह मर्दों के लिये औरतों से बडा कोई क़िल्ना नहीं छोडा है.”

(ईमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है, मुलाहेज़ा हो : हदीस नं. २०६७)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने फ़रमाया —

“जब कोई औरत अपने शौहर को दुनिया में तकलीफ़ पहुंचाती है, तो जन्नत में उसकी हूर बीवीयां कडती है, फुदा तुम्हारा नास करे, तुम ईसको तकलीफ़ें ना पहुंचाओ, ईस लिये के वो तुम्हारे पास आरज़ी अमानत है और जल्द ही तुमसे क़िराक हासिल करके हमारे पास आ जायेगा.”

(ईमाम अहमद और तिरमिज़ी ने रिवायत किया है, मुलाहेज़ा हो : सहीहुल ज़ामेअ, ७१८२)

ईस लिये अेक मुसलमान फ़ातून के लिये ज़्यादा मुनासिब है के वो चिरागे-पाना बनी रहे और अल्लाह तूआला की ईबाहतगुज़ार और शौहर की मुतीअ-

व-इरमाबदर रडे और उसके लुकूक की रिआयत करे और उसके साथ बद्अप्लाकी ना करे.

ईस सिलसिले में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम का ईरशाह है —

“तीन तरह के लोग अल्लाह त्आला से दुआओं करते हैं, लेकिन उनकी दुआओं कुबूल नहीं की जाती; अक वो शप्स है, जिसके निकाह में कोई बद्अप्लक औरत हो, लेकिन वो उस को तलाक नहीं देता; दूसरा वो शप्स है, जिसका माल किसी के जिम्मे हो, लेकिन वो उस पर गवाह नहीं बनाता; तीसरा वो शप्स है, जो किसी बेवकूफ को माल अता करता है, हालांकि ईरशाह बारी त्आला है — व-ला तुअ्तूस-सुईहा- अ अम्वालकुम...- निसा : ५, और कमअकलों को अपना माल ना दे दो.” (सहीहुल जमेअ, ३०७५)

मज्जुरा बाला सारी हदीसें औरत के जिम्मे शौहर के लुकूक की अहमियत को बताती है. हमने ईस मस्ले पर कदरे तफ्सील से ईस लिये रोशनी डाल दी है, क्यूं के मौजूदा दौर में मुसलमान औरतों में मगूरिबी तेहजीब-व-तमद्दुन से इरीफ्तगी और अभिरीकी और युरपी इाजिरा-व-इालिशा औरतों की तकलीद बढ़ती जा रही है और वो भी उन्हीं की तरह बेइयाई व बेपर्दगी से बन-ठनकर सैरो-तइरीह के लिये घरों से बाहर निकलने लगी हैं, और इन्हों ने अपने शौहरों की नाइरमानी में मगूरिबी औरतों की तकलीद शुर्इ कर दी है, और बहुत से मरद्दुमनुमा शौहरों के उमूर उनकी औरतों के हाथ में हो गये हैं. अल्लाह त्आला ऐसी सूरतेहाल से पनाह में रभें और परदादार नेक प्वातीन की ता'दाह में ईजाइ इरमाओं.

मेरी नसीहत है के अय मुसलमान भाई ! आप परदानशीं और दीनदार औरत से शादी करें, जो अपनी और आपकी ईज्जतो-आबर्इ और मालो-दौलत की डिफाजत करे और जो बन-ठनकर और ખૂશू में मुअत्तर होकर ना नीकलें और आपकी इरमाबदर हो, क्यूं के जिस किशती के नापुदा हो छोते हैं, वो गर्के-आब हो जाती है.

ईसी तरह अपनी बीवी को ખैरो-भलाई की नसीहत करते रहना याहिये, जैसा के नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने इरमाया —

“औरतों को ખैरो-भलाई की बातों की ताकीद करते रहना याहिये, क्यूं के औरत टेण्डी पसली से पैदा हुई है और पसली का सबसे टेण्डा डिस्सा उपरवाला

छिस्सा है, तो अगर तुम इसको सीधा करने लगोगे तो तोड़ दोगे और अगर इसी तरह छोड़ दोगे तो टेण्टी ही रहेगी. इस लिये औरतों को भैरो-भलाई की ताकीद करते रखा करो.”

(ईमाम बुजारी ने रिवायत किया है, मुलाहेजा छो : अल-इत्ह, ८/२५३)

इसी तरह औरतों को अल्लाह त्आला की ईताअत और उसके अहकाम की ईत्तेबाअ का हुक्म करना याहिये और उन तमाम बातों और आदात से ईज्तिनाअ की ताकीद करनी याहिये, जिनसे अल्लाह त्आला ने रोका है, और यही जम्त तक ले जानेवाला रास्ता है.

४८. कपड़ों और दीवारों और पथरों पर तस्वीरे बनाना :

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने इरमाया —

“जो लोग ऐसी तस्वीरे बनाते हैं, वो कियामत के दिन अजाब से दोगार होंगे और उनसे कडा जायेगा के तुमने जिन चीजों को बनाया है, इन बनाई हुई चीजों में इह डालकर जिंदा करो.”

(ईमाम बुजारी और मुस्लिम और इनके अलावा दूसरे मुहद्देसीन ने रिवायत किया है, मुलाहेजा छो : इत्हुल बारी, १०/३८३)

उजरत आईशा रदिएल्लाहु अन्हा इरमाती है के, अक दईा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम मेरे यहां तशरीफ लाये और मैंने अक ताक या अल्मारी पर अक परदा डाला हुआ था और उस परदे में तस्वीरें थीं. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने जब उसको देखा तो इाड डाला और इरमाया, “सबसे ज्यादा सभ्र अजाब में कियामत के रोज वो लोग होंगे, जो अल्लाह त्आला की सिइते-तप्वीक की नइल उतारते हैं.” उजरत आईशा इरमाती हैं के इर इमने उसके अक या दो तकिये बना डाले.

(ईमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है, उदीस नं. १३६६)

४८. मुसीबत के वक्त नौहागरी और सीनाकूबी करना :

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने इरमाया —

“जो शप्स येहरे को उदो-कोब करे और गिरेबान इाडे और जाहिलाना

नअुराबाजी करे, वो डममें से नहीं है.”

(ईमाम बुभारी ने रिवायत किया है, मुलाहेजा डो : अल-इत्ह, 3/143)

५०. सरकशी करना :

अल्लाह तूआला का ईरशाह है —

“ईन्नमसू-सबीलु अलल्लजीन यज़्लिमूननास व-यब्गून डीलू-अई बि-गईरिल् डकक. डिला-ईक लडुम् अजाबुन् अलीम.” (शूरा : ४२)

“ईल्लाम तो उन लोगों पर है, जो लोगों पर जुल्म करते और जमीन पर नाहक सरकशी करते डिरते हैं. ऐसों के लिये दईनाक अजाब है.”

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने डरमाया —

“अल्लाह तूआला ने मेरे पास ये वडी ल्मेज है के लोग बाहमी तौर पर बुश-अप्लाकी और ईनूकिसारी से पैश आर्ये, यडां तक के कोई किसी पर इभ्र व मुभाडात (शेभी) ना करे और कोई किसी पर जुल्म व ज्यादती ना करे.”

(ईमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है, मुलाहेजा डो : अन्-नववी, १०/3८५)

नीज रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने डरमाया —

“सरकशी और कतअू-रडमी से बढकर कोई गुनाह दुनिया में जल्ल-अज-जल्ल सजा का और आभिरत में अजाब को वाजिब करनेवाला नहीं.”

(ईसे ईमाम अबू दाउद वगैरहने रिवायत किया है.)

५१. कमजोरों, गुलामों, बांटीयों, बीवीयों और जानवरों पर जुल्म व ज्यादती करना :

नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने डरमाया —

“जिसने अपने गुलाम की किसी ऐसे ई'अल पर पिटाई की, जिससे उसने नहीं किया था या उसे तमांया मारा, तो उसका कफ़ारा ये है के वो उसे आजाह कर दे.” (मुलाहेजा डो : सडीह मुस्लिम, ८०१)

नीज आपने ईरशाह डरमाया —

“अल्लाह तूआला उन लोगों को अजाब देगा, जो लोगों को दुनिया में अजाब देते हैं.” (ईमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है, डदीस नं. १८३३)

પર. પડોસી કો તકલીફ દેના :

નબી અકરમ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ-સલ્લમ ને ફરમાયા —

“વો શપ્સ જન્મત મેં નહીં જાયેગા, જિસકે પડોસી ઉસકી ઈઝારસાની સે મહફૂઝ ના હોં.” (મુલાહેઝા હો : સહીહુલ જામેઅ, ૭૦૦૨)

નબી કરીમ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ-સલ્લમ ને ફરમાયા —

“મુજે હઝરત જિબ્રઈલ બારબાર પડોસી કે સાથ હુસ્ને-સુલૂક કી તાકીદ કરતે રહે, યહાં તક કે મુજે ખયાલ પૈદા હોને લગા કે આપ ઈસકો વારિસ બના દેંગેં.”

(ઈમામ મુસ્લિમ ને રિવાયત ક્રિયા હૈ, નવવી, ૧/૫૨૪)

પ૩. મુસલમાનોં કો તકલીફ પહુંચાના ઓર ગાલિયાં દેના :

અલ્લાહ ત્આલા કા ઈરશાદ હૈ —

“વલ્લઝીન યુઅઝૂનલ્ મુઅ્મિનીન વ-લ મુઅ્મિનાતિ બિ-ગઈરિ મક્-તસબૂફ-કદિહ્-તમલૂ બૂહ્તાનવ્-વ-ઈસ્મમ્-મુબીના.” (અહ્ઝાબ : ૫૮)

“ઓર જો લોગ ઈઝા પહુંચાતે રહતે હૈં ઈમાનવાલોં કો ઓર ઈમાનવાલીયોં કો બગૈર ઈસકે કે ઉન્હોંને કુછ ક્રિયા હો, તો વો લોગ બોહતાન ઓર સરીહ ગુનાહ કા બાર (અપને ઉપર) લેતે હૈં.”

નબી કરીમ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ-સલ્લમ ને ફરમાયા —

“ક્રિયામત કે દિન અલ્લાહ ત્આલા કે નઝદીક બદતરીન શપ્સ વો હોગા, જિસકે શર સે મહફૂઝ રહને કી ખાતિર લોગોં ને ઉસસે કતઅ-તા'લ્લુક કર લિયા હો.”

(ઈમામ બુખારી ને રિવાયત ક્રિયા હૈ, અલ-ફતહ, ૧૦/૪૫૨)

પ૪. ટખનોં સે નીચે કપડે પહનના :

નબી કરીમ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ-સલ્લમ ને ફરમાયા —

“જો ઈઝાર ટખનોં સે નીચે લટકાઈ જાયે, વો આગ મેં હોગી.”

(ઈમામ બુખારી ને રિવાયત ક્રિયા હૈ.)

એક દૂસરી હદીસ મેં આપને ઈરશાદ ફરમાયા —

“અલ્લાહ ત્આલા ઉસ શપ્સ કી તરફ નિગાહ નહીં કરેગા, જિસકા ઈઝાર

तक़्बुर की वजह से नीचे लटकता हो।”

(ईमाम बुखारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है।)

अफ़सोस के मौजूदा दौर में इसकी वजा आम हो गई है। बस, अल्लाह जिस पर रहम फ़रमाए, वही इस वजा से मछूज़ है। लोगों के कपड़े आम तौर पर टपनों से नीचे होते हैं। बसा-अवकात ज़मीन तक पहुंच जाते हैं। अल्लाह तआला हमें और आपको इस बद्अमली से मछूज़ रहे।

प५. सोने और यांटी के बरतनों में पाना-पीना :

नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने फ़रमाया —

“जो शप्स सोने या यांटी के बरतन में पाना या पीता है, वो अपने पेट के अंदर जलजम की आग दाखिल कर रहा है।”

(ईमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है।)

प६. मर्दों का रेशमी और सुन्दरी (सोने की) मल्बूसात और मस्नूआत इस्तेमाल करना :

नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने फ़रमाया —

“वही शप्स दुनिया में रेशमी लिबास ज़ैबतन करता है, जिसका आभिरत (के मल्बूसात) में से कोई हिस्सा नहीं।”

(ईमाम मुस्लिम रिवायत किया है, हदीस नं. १३३५)

नीज़, नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम का इरशाद है —

“मेरी उम्मत के मर्दों पर रेशमी लिबास और सोना पहनना हुराम कर दिया गया है, और औरतों के लिये ये चीज़ें हलाल की गई हैं।”

(मुलाहेज़ा हो : सहीह सुनन अल-तिरमिज़ी, हदीस नं. १४०४)

प७. गुलाम का अपने मालिक के पाससे भाग जाना :

नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम इरशाद है —

“जब गुलाम भाग जाता है, तो उसकी नमाज़ कुबूल नहीं होती।”

એક દૂસરી રિવાયત મેં હે —

“યહાં તક કે અપને આકા કે યહાં વાપસ લૌટ આયે.”

(મુલાહેજા હો : સહીહુલ જામેઅ, ૨૫૭)

૫૮. ગૈરુલ્લાહ કે લિયે જાનવર ઝિબૂહ કરના :

નબી કરીમ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ-સલ્લમ ને ફરમાયા —

“અલ્લાહ ત્આલા ને ઉસ શખ્સ પર લા'નત ફરમાઈ હે, જિસને ગૈરુલ્લાહ કે લિયે ઝિબૂહ ક્રિયા હો.”

(ઈમામ મુસ્લિમ ને રિવાયત ક્રિયા હે, અન્-નવવી, ૮/૨૫૮)

ગૈરુલ્લાહ કે લિયે ઝિબૂહ કરને કી શકલ યે હે કે કોઈ શખ્સ ઝિબૂહ કરતે વક્ત યે કહે કે યે જાનવર શૈતાન યા કિસી બુત યા ફલાં શૈખ વગૈરહ કે નામ સે ઝિબૂહ કરતા હું.

૫૯. જાનબૂઝકર અપને આપ કો બાપ કે અલાવા કિસી ઓર કી તરફ મન્સૂબ કરના :

નબી કરીમ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ-સલ્લમ ને ફરમાયા —

“જો શખ્સ જાનબૂઝકર અપને આપકો અપને બાપ કે અલાવા કિસી ઓર કી તરફ મન્સૂબ કરે, તો ઉસ પર જન્નત હરામ હે.”

(સહીહુલ જામેઅ, હદીસ નં. ૫૮૬૫)

૬૦. ફુઝૂલ બહસો-મુબાહિસા કરના :

યા'ની કિસી કે કલામ મેં ઐબજુઈ કરના, તાકે ઉસકી નાઅહલિયત સાબિત કરકે તહકીર કી જાયે ઓર અપની કાબલિયત કા ઈઝહાર ક્રિયા જાયે. એક તવીલ હદીસ મેં નબી કરીમ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ-સલ્લમ કા ઈરશાદ હે —

“જિસ શખ્સ ને કિસી બાતિલ મસ્લે પર કઠહુજજતી કી, હાલાંકે વો ઉસકી (સહીહ સૂરતેહાલ) સે વાકિફ હે, તો વો અલ્લાહ ત્આલા કી નારાઝગી મોલ લેતા હે, યહાં તક કે ઉસસે બાઝ આ જાયે.”

(ઈમામ અબૂ દાઉદ ને રિવાયત ક્રિયા હે, મુલાહેજા હો : સહીહુલ જામેઅ, હદીસ નં. ૬૧૮૬)

दूसरी जगह नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने इरमाया —

“कोई कौम छिदायतयाब होने के बाद उस वक्त गुमराह हो जाती है, जब वो बहसो-मुबाहिसा में पड जाती है.”

(इमाम अहमद और तिरमिजी ने रिवायत किया है, मुलाहेजा हो : सहीहुल जामेअ, ५६३३)

६१. जुहरत से ज़ाईद पानी रोकना :

नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने इरमाया —

“जिस शप्स ने जुहरत से ज़ाईद पानी या सब्जियों को (किसी को देने से) रोक लिया, तो अल्लाह त्आला क्रियामत के दिन अपने इज़्लो-करम को उससे रोक लेगा.” (इमाम अहमद ने रिवायत किया है, सहीहुल जामेअ, ६५६०)

६२. नापतौल में कमी-व-बेशी करना :

अल्लाह त्आला का इरशाद है —

“वर्धुंलु-लिह-मुतर्फिनीन, अल्लजीन इजकतावू अलत्रासि यसतव्हून, वर्धजा कालुहुम् अव-वजनुहुम् युप्सरून.” (मुतर्फिनीन : १-३)

“बडी भराबी है (नापतौल में) कमी करनेवालों के लिये, के जब लोगों से नापकर लें तो पूरा लें और जब उन्हें नापकर या तौलकर दे तो घटा दे.”

६३. तदबीरे-ईलाही से बेभौड़ व बेइक हो जाना :

नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम कसरत से ये हुआ पढा करते थे —

“या मुकद्लिबुल-कुलूब, सब्बित कल्बी अला दिनीक.”

“अय दिलों के पलटनेवाले ! हमारे कुलूब को अपने दीन पर साबित रफ.”

युनांये अर्ज किया गया के, “या रसूलुल्लाह ! आपको हमारे सिलसिले में भतरा है ? तो आप सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने इरमाया — “सारे कुलूब रहमान की उंगलियोंमें से दो उंगलियों के दरमियान है. उनको जिस तरह याहता है उलटता-पुलटता रहता है.”

(इमाम अहमद ने रिवायत किया है, सहीहुल जामेअ, १६५८)

ईस लिये अय त्माई ! आपको अपने ईमान और अमले-सालेह और नमाज व रोजे और तमाम ईबादात ज्वाह कितने ही ज्वादा और अच्छे हों, ईसके पैशनजर अजब (ग़र) और जुदपसंदी में मुज्तिहा नहीं होना याहिये, क्यूं के ये जो सब सरासर इज़्जले-जुदावंदी है, वो यश्मे-जदन (आंख की पलक जपकने) में सलब कर सकता है और इन ईनाम व ईकराम से तुम महज़ूम भी हो सकते हो और ईस तरह कुलूब जैरो-बरकत से ज्वाली हो सकते हैं.

ईस लिये जुदपसंदी और अहेसासे-बरतरी से ईज्तिनाब करना याहिये, बा'ज बेवकूफ लोग कलने लगते हैं के हम इलां-इलां शप्स से अइजल हैं, क्यूं के हम जैसे-जैसे काम अंजाम देते हैं, जो के उन्हींने नहीं किया है, जालांके अल्लाह त्आला तमाम अइआल और दिलों के राजों को जानता है. ब-हैसियत अक सख्ये मुसलमान के, आपको हंमेशा अल्लाह के जौइ व गजब से डरना याहिये और अपनी कोताहियों का ओहसास व अ'तिराफ़ करना याहिये और आ'माले-हसना को कम ही तसव्वुर करना याहिये और अपनेको ऐसी कैफ़ियत में रफना याहिये, जिसको नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने यूं बयान इरमाया है —

“अपनी ज्बान को काबू में रफो और अपने घर को कुशादा समजो और अपने गुनाहों पर गिरया-व-जारी करते रहा करो.”

(ईमाम तिरमिज़ी ने रिवायत किया है, सहीहुल जामेअ, १३८२)

ईस लिये अपने अमले-सालेह पर त्मरोसा ना करो और अल्लाह त्आला के मज़र से जुद को महज़ूज ना समजो और उन लोगों की तरह ना बनो, जिनके मुता'ल्लिक अल्लाह त्आला का ईरशाद है —

“अइअमिनु मज़रल्लाहि, यअ्मनु मज़रल्लाहि ईल्लल्-कम्बुल्-ज्वासिइन.”

(आ'राफ़ : ८८)

“क्या ये लोग अल्लाह की जुफ़िया तदबीरों से बेजौइ हो गये हैं, सो अल्लाह की तदबीर से कोई भी बेजौइ नहीं होता, बजुज उन लोगों के जो घाटे में आ यूके हैं.”

और अल्लाह त्आला से हंमेशा हुसूले-आइफ़ियत के लिये दुआओं करते रहा करो और ईस दुआ को दुहराते रहा करो —

“या मुकल्लिबुल्-कुलूब, सज्जित कल्मी अला टिनीक.”

“अय टिलों के पलटनेवाले ! हमारे कुलूब को अपने दीन पर साबित रभ.”

और अल्लाह त्आला से आकेबत बिल्-भैर तलब करते रहा करो.

६४. मुरदार जानवर और सुव्वर का गोश्त खाना :

अल्लाह त्आला का एरशाद है —

“कुल्-ला- अजिदु डी मा- उडिय एलय्य मुहर्मन् अला ताईमिन्-यत्अमुहू
एल्ला-अन्-यकून मईततन् अव्दमम्-मस्कूडन् अव्दल्म भिन्जिरिन् इ-एत्रहू
रिजसुन्...” (अन्आम : १४५)

“आप (सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम) कह टिजिये के मुज पर वही आती
है, एसमें तो मैं (ओर) कुछ नहीं हराम पाता किसी खानेवाले के लिये, सिवाये
एसके के वो मुरदार हो या बहता हुआ भून हो या सुव्वर का गोश्त हो, क्यूं के
वो बिलकुल ही गंदा है.”

नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने इरमाया —

“जिस शप्स ने नई (शतरंज) खेला, गोया के उसने सुव्वर के गोश्त और
उसके भून में अपना हाथ रंग लिया.”

(ईमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है, मुलाहेजा हो : अन्-नववी, ८/५५)

जब हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम सुव्वर के गोश्त और भून से
हाथ आलूदा होने को गुनाह ही नहीं, बल्के गुनाहे-कबीरा इरमा रहे हैं, तो
एसका खाना और इस्तेमाल करना, मआजल्लाह, कितना बडा गुनाह होगा !
अल्लाह त्आला एससे महझूज रहे.

६५. नमाजे-जुम्आ और जमाअत छोडना :

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने इरमाया —

“लोग जुम्आ को छोडने से भाज रहे, वरना अल्लाह त्आला उनके टिलों
पर मुहूर लगा देगा, फिर वो गाइलोंमें से हो जायेंगे.”

(ईमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है, उदीस नं. ८६५)

दूसरी उदीस में एरशाद है —

“जिस शप्स ने अजान सुनी और (मस्जिद में) नहीं आया, तो उसकी नमाज ही नहीं होती, मगर उज़र के वक्त.”

(इब्ने माज और इब्ने हब्बान ने रिवायत किया है, मुलाहेजा हो : सहीहल जामेअ, ६३००)

६६. अल्लाह तआला की रहमतों से मायूस होना :

अल्लाह तआला का एरशाद है —

“एत्रहु ला ययअसु भिर-रव्हिल्लाहि एल्लल् क्मुल काफिरन.”

(यूसुफ़ : ८७)

“अल्लाह की रहमत से मायूस तो बस काफिर लोग ही होते हैं.”

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने इरमाया —

“तुममें का हर शप्स अल्लाह तआला से हुस्ने-ज़न रभते हुअे वफ़ात पाअे.”

(इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है, अन्-नववी, १०/३८६)

६७. मुसलमान को काफिर ठहराना :

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने इरमाया —

“जिसने अपने किसी मुसलमान भाई को काफिर कहकर मुजातिब किया, तो उनमें से कोई अक़ेक़ इसका मुस्तहिक़ हो गया.”

(इसे इमाम बुखारी ने किताबुल-अदब में रिवायत किया है)

६८. मक़रो-इरेब और धोकेबाज़ी :

अल्लाह तआला का एरशाद है —

“व-ला यहिकुल् मक़रुस्-सय्यिउ एल्ला बि-अह्लिही.” (झातिर : ४३)

“और बूरी यालों का वबाल इन्हीं यालवालों पर पडता है.”

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने इरमाया —

“मक़रो-इरेब और धोकेबाज़ी का उशूर ज़हन्नम है.”

(इमाम बयहकी ने शो'अबुल-इमान में रिवायत किया है, मुलाहेजा हो : अल-सिलसिलाअे अल-सहीहा, १०५७)

६८. मुसलमानों के खिलाफ जासूसी करना और उनके औंओं को षोल देना :

अल्लाह त्आला का ँरशाद है —

“व-ला तुतिअ कुल्ल हल्लाकिम्-महीन, हम्मजिम्-मशशाँम् बि-नमीम.”

(कलम : १०-११)

“और आप जैसे शप्स का ली कडा ना मानें, जो बडा कसमें षानेवाला है, ललील है, ता'नाभाज है, युगलढोरी करते फिरता है.”

अेक तवील हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम का ँरशाद है —

“जिसने किसी मुसलमान के मुता'व्लिक औसी षात कही, जो उसके अंदर नहीं पाँ जती, अल्लाह त्आला उसे जहन्नमीयों के पीप और पसीने में हडरायेगा, ता-वक्त-ये के वो अपनी कही लुँ षात से निकल जाये, ढालांके वो नहीं निकल सकता.” (ँमाम अबू हाँउद और तबरानी ने रिवायत किया है, सहीहलुल जमेअ, ६१८६)

७०. सडाभा को बूरा-ल्ला कडना :

नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने ढरमाया —

“मेरे सडाभा को बूरा-ल्ला ना कडो, कसम है उस जाते-पाक की, जिसके ढाथ में मेरी जान है! अगर तुममें से कोई शप्स उहद (पडाड) के बराबर ली (अल्लाह के रास्ते में) सोना षर्य करे, तब ली उनके अेक मद या निस्फ़ मद के बराबर नहीं ढो सकता.”

(ँमाम बुजारी ने रिवायत किया है, अल्-इत्ह, ६/२१)

मजीद नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम का ँरशाद है —

“जिसने मेरे सडाभा को गाली दी, उस पर अल्लाह त्आला की और ढरिशतों की और तमाम लोगों की ला'नत है.”

(ँमाम तबरानी ने रिवायत किया है, सहीहलुल जमेअ, ६२८५)

७१. नाहक ढैसला करना :

नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने ढरमाया —

“दो किस्म के काजी जलत्रम में जायेंगे, और अक काजी जत्रत में जायेगा. जिस काजी ने उक तक रिसाई छसिल की और उसके मुताबिक ईसला किया, वो जत्रत में जायेगा, और जिस काजी ने उक की मा'रिफत रफते हुअे कसदन् जालिमाना ईसला किया, या बगैर ईल्म व तडकीक के (नाउक) ईसला किया, तो ये दोनों (किस्म के काजी) जलत्रम में जायेंगे.”

(हाकिम ने रिवायत किया है, सहीहुल जामेअ, ४२८८)

७२. इलश कलामी करना :

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने इरमाया —

“जिस शप्स के अंदर ये चार चीजें हों वो पक्का मुनाफिक है, और जिसके अंदर उनमें से कोई अक सिफत होगी तो वो निफाक की अक सिफत का डामिल होगा, यहाँ तक के उसे छोड दे; जब उसके पास अमानत रफी जाये तो भियानत करे, और जब बातचीत करे तो जूट बोले, और जब मुआडेदा करे तो गदारी करे, और जघडा करे तो इलश कलामी करे.”

(ईमाम बुखारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है, सहीहुल जामेअ, उदीस नं. ८८८)

७३. नस्ब में औबजूई करना :

नबी करीम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने इरमाया —

“जिस शप्स के अंदर ये दो सिफतें हों, उनसे वो कुइ तक पहुंच सकता है; नस्बों मे ता'न व तश्नीअ करना, और मुर्दों पर नोडा करना.”

(ईमाम मुस्लिम व अडमद ने रिवायत किया है, सहीहुल जामेअ, उदीस नं. १३८)

७४. मुरदों पर नोडा करना :

(मजकूरा बाला उदीस ईसकी दलील है.)

७५. संग-मील मिटा देना :

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने इरमाया —

“अल्लाह त्आला ने उस शप्स पर ला'नत भेज् है, जो रास्तों के संग-मील को मिटा देता है.”

(ईमाम मुस्लिम और दूसरे मुहदसीन ने रिवायत किया है, सहीहुल जामेअ, ५११२)

७६. किसी बूरी आदत का ईजाद करना या गुमराही की दा'वत देना :

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने फरमाया —

“जिस शप्स ने ईस्लाम में कोई नया तरीका ईजाद किया तो उस पर उसका और उस पर अमल करनेवालों का गुनाह होगा, जब के उसके करनेवालों के गुनाहों में कोई कमी नहीं की जायेगी.”

(ईमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है.)

ईसी तरह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम का ईरशाद है —

“जिस शप्स ने किसी गुमराही की तरफ़ दा'वत दी, तो उस पर उसका गुनाह ईतना ही होगा, जितना उसके बाद उस पर अमल करनेवालों का होगा और उनके गुनाहोंमें से कुछ कम नहीं किया जायेगा.”

(ईमाम मुस्लिम और अहमद ने रिवायत किया है.)

७७. बाल में बाल मिलाना और जिस्म गुदवाना :

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने फरमाया —

“अल्लाह तूआला की ला'नत हो जिस्म गुदवानेवाली पर और गुदवानेवालीयों पर, और उन औरतों पर जो अबूज़ (आईब्रो) या'नी भवों के बाल युनती हैं और उन औरतों पर भी जो युनवाती है, और अल्लाह की ला'नत हो उन औरतों पर जो हुस्न के लिये दांतों के दरमियान कुशादगी करती है, जो अल्लाह की जल्कत को बदलनेवाली हैं.”

(ईमाम बुखारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है, सहीहलुल जामेअ, ५१०४)

अक दूसरी हदीस में फरमाया —

“अल्लाह की ला'नत हो उस औरत पर जो (बालों को लंबा या झेला हुआ बनाने के लिये दूसरे किसी मर्द या औरत के बाल) अपने बालों में या किसी ओर के बालों में मिलाये, और उस औरत पर भी अल्लाह की ला'नत हो, जो किसी औरत से कहे के दूसरे के बाल मेरे बालों में मिला दे.”

और फरमाया —

“अल्लाह की ला'नत हो उस औरत पर जो गुदनेवाली है और उस पर भी जो गुदवानेवाली है.”

७८. किसी मुसलमान को लोहा टिप्पाकर धमकी देना :

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने फरमाया —

“जिस शप्स ने किसी (मुसलमान) भाई को लोहा टिप्पाकर धमकी दी, तो इरिश्ते उस पर ला'नत भेजते हैं, अगर-ये वो उसका हकीकी भाई हो.”

(ईमाम मुस्लिम वगैरह ने रिवायत किया है.)

ईस शदीह वईह की तौजिहा करते हुअे अेक दूसरी हदीस में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ईरशाह फरमाते हैं —

“ईस लिये के तुममें कोई शप्स ये नहीं जानता के शैतान उसके हाथ से (हथ्यार) भींच ले और वो (शप्स) जहन्नम के गण्डे में जा गिरे.”

(ईमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है, हदीस नं. २६१७)

७९. हरमे मुहरतम में मुल्हदाना काम करना :

अल्लाह त्आला का ईरशाह है —

“वल मस्जिदिल् हरामिल्लाजी जअल्लाहु लिग्रासि सवा-अनिल्-आकिहु ईहि वल्-बाह. व-मंय-युरिह् ईहि बिल्-हादिम् बि-जुल्मिन्-नुजिकहु मिन् अजाबिन् अलीम.” (हजज : २५)

“और मस्जिदे-हराम से, जिसको हमने मुकरर किया है लोगों के वास्ते, के उसमें रहनेवाला और बाहर से आनेवाला सब बराबर है, और जो कोई भी उसके अंदर रास्ती से हटकर जुल्म का रास्ता ईप्पियार करेगा, हम उसे दईनाक अजाब यभायेंगे.”



कुआनि-करीम और सुन्नते-तय्यिबा की रोशनी में पिछले सफ़ात में बा'ज उन अहम कबीरा गुनाहों का तजक़िरा था, जिन्हें उल्माअे-किराम ने अपनी-अपनी तालिफ़ात में और ખુसूसन् ईमाम ज़हबी रहमतुल्लाह अलयहि ने अपनी मशहूर-व-मा'रूफ़ किताब 'अल-कबाईर' में मुदव्वन इरमाया है.

आबिर में हम अल्लाह तआला से हुआगो हैं के वो हमको उन तमाम कबीरा गुनाहों से मरहूज़ रहें, जिनसे हम वाकिफ़ हैं या नहीं हैं और उन तमाम चीज़ों से ईशतिनाब की तौफ़िक़ दे, जिसे वो पसंद नहीं इरमाता, और जो कोताहियां हो गई हैं, उन्हें मुआफ़ इरमाअें. नीज़ हमें उस मुफ़लिस के कबील से ना बनाअे, जिसके मुता'ल्लिक़ नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने ये इरमाया है —

“जानते हो के मुफ़लिस कौन है ? मेरी उम्मत में दरहकीकत मुफ़लिस वो शप्स है, जो कियामत के रोज़ नमाज़, रोज़ा, ज़कात वगैरह लेकर हाज़िर होगा, और औसी हालत में हाज़िर होगा के किसीको दुनिया में गाली दी होगी, किसीको तोहमत लगाई होगी, किसीका माल हज़म कर लिया होगा, किसीकी ખूंरेज़ी की होगी, या किसीको नाहक मारा-पीटा होगा, तो जिस शप्स को, मखलन्, उसने गाली दी होगी उसे उसकी नेकीयां दे दी जायेगी और दूसरे को, मखलन्, जिसको उसने मारा-पीटा होगा उसको भी उसकी नेकीयां दे दी जायेगी, फिर इन मज़ालिम के अदा होने से पहले अगर उसकी नेकीयां ખत्म हो गई, तो उन मज़लूमों के गुनाह उसके सर डाल दिये जायेंगे, फिर उसको ज़हन्नम में इंक़ दिया जायेगा.” (ईमाम अहमद और तिरमिज़ी ने रिवायत किया है, सहीहूल ज़मेअ, ८७)

ईस लिये हर मुसलमान भाई को अपना जाती मुहासबा करना याहिये, कबल ईसके के अल्लाह तआला कियामत के दिन उससे मुहासबा इरमाअें, लिहाज़ा हर दिन या हर हफ़ते या कम-अज़-कम हर महिने ये मुहासबा कर लेना याहिये के ખुदा-नख्वास्ता, ईससे कोई औसा कौल व इअ्ल तो सरज़द नहीं हो गया है, जो सहीह अकीदे के मनाफ़ी हों ? या दीन के सुतून नमाज़ में कोताही तो नहीं हो रही है ? क्या ईस्लाम के बकिया अरकान सहीह तौर पर अदा हो रहे हैं ? या मज़क़ूरा बाला कबीरा गुनाहों का वो मुरतक़िब तो नहीं हो रहा है ? और उसे तौबा की तौफ़िक़ हो रही है के नहीं ? लिहाज़ा अय भाई ! आप को सख्खी तौबा करने में जल्दी करनी याहिये, क्यूं के कबीरा गुनाह सख्खी तौबा करने से मुआफ़ कर दिये जाते हैं. (ईन्-शा अल्लाह)

ईसी तरह तौबा अन्-नसूह (सख्खे दिलसे तौबा) की खंद शरतें हैं —

- अव्वल : गुनाह के ईर्तिक़ाब पर शरमिंदा होना.
- दोम : गुनाह को दोबारा ना करने का अज़्मे-मुसम्मम करना.
- सोम : ईप्वास के साथे सिर्फ़ अल्लाह त्आला की रिज़ा के लिये तौबा करना.
- यह्यरुम : गुनाह के ईर्तिक़ाब में हुकूकुल-ईबाद की हक़-तल्की की सूरत में हक़ को सालबे-हक तक पहुँचाना; जैसे आपने किसी शप्स को गाली दी या ज़बरदस्ती उससे कोई चीज़ हासिल कर ली, तो सबसे कबल ईन हुकूक को वापस किया जाये और उससे मुआफ़ी की दरप्वास्त की जाये.

और अगर किसी से औसा कबीरा गुनाह सरज़द हुआ हो, जिसमें किसी दूसरे शप्स की हक़-तल्की ना हुई हो, तो उससे तौबा करने के लिये मज़कूरा बाला पहली तीन शरतें काफ़ी है.

हम अल्लाह त्आला से दस्त-ब-दुआ हैं के वो हमारे गुनाहों को मुआफ़ और तौबा को कुबूल इरमाओं. “ईन्नहु समीउम्-मुज्जब.” (वह सुनता है और जवाब देता है.)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलयहि व-सल्लम ने इरमाया — “हर आदमी से गलती सरज़द होती है, लेकिन गलती करनेवालों में अच्छे वो लोग हैं, जो तौबा कर लेते हैं.” (ईमाम अहमद और तिरमिज़ी वगैरह ने रिवायत किया है.)

कबीरा गुनाह के मुता’ल्लिक़ यहाँ ये बात वाज़ेह कर देना मुनासिब मा’लूम होता है के जब गुनाहे-कबीरा किसीसे सरज़द होता है, तो उसका गुनाह सिर्फ़ उसी शप्स तक महदूद रहता है; हां, अगर उसने किसी दूसरे की उसके ईर्तिक़ाब करने में मदद की है, तो उसको भी मुर्तकिब होनेवालेकी तरह गुनाह मिलेगा, और यही उसूल गुनाहे-सगीरा के मुता’ल्लिक़ भी है.

ईस लिये हर मुसलमान को दाईअे-भैर होना चाहिये और दाईअे-शर व मअसियत नहीं होना चाहिये.

अल्लाह त्आला हम सब लोगों को ईससे महकूज़ रहे —

إِنَّهُ سَمِيعٌ مُّجِيبٌ، وَصَلَّى اللّهُ عَلَى عَبْدِهِ وَرَسُولِهِ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ، وَآخِرُ دَعْوَانَا أَنْ الْحَمْدُ لِلّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ.



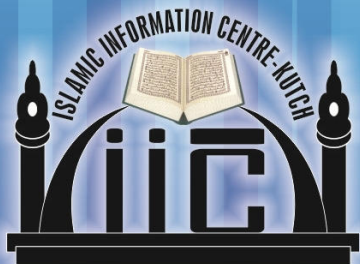
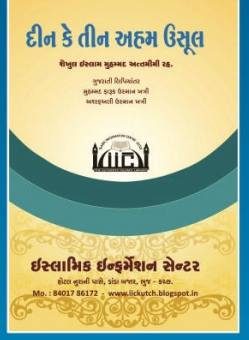
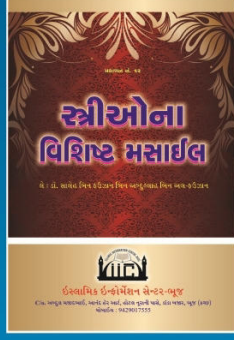
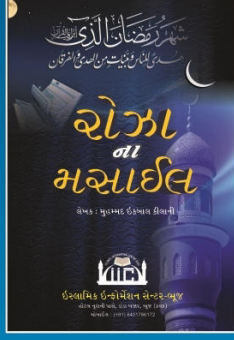
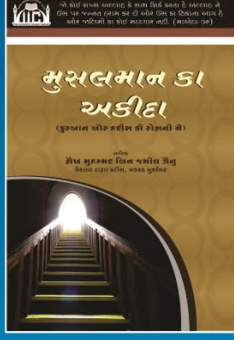
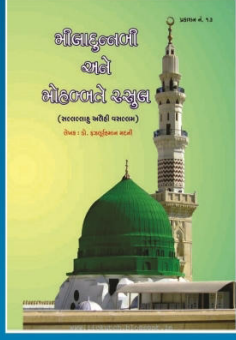
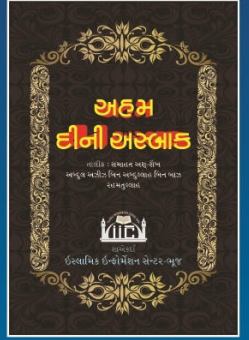
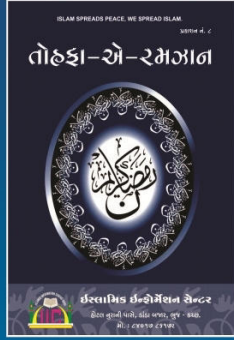
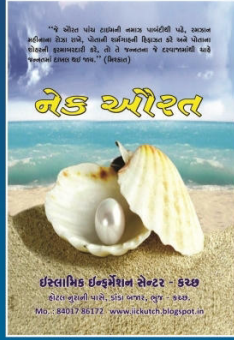
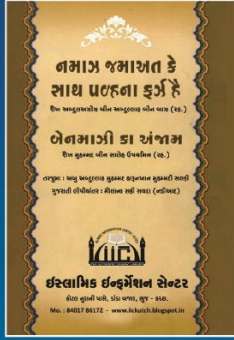
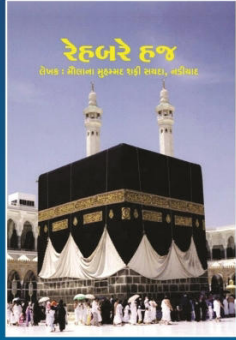
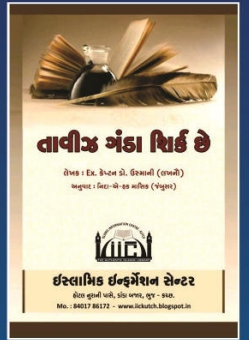
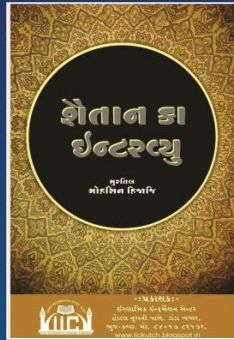
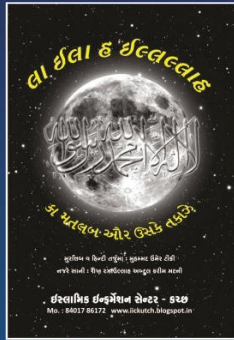
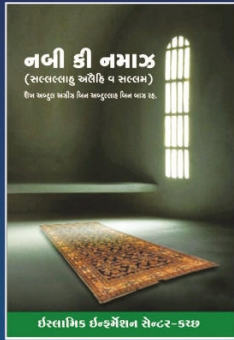
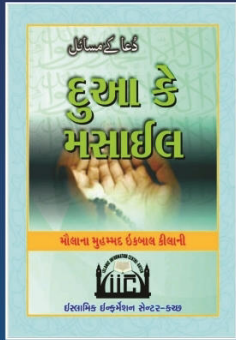
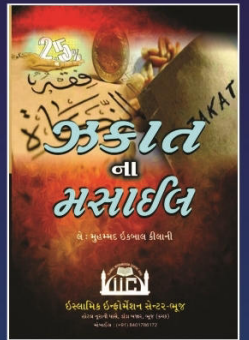
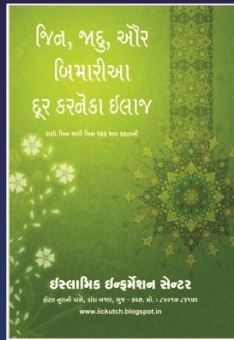
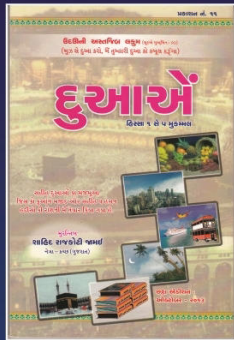
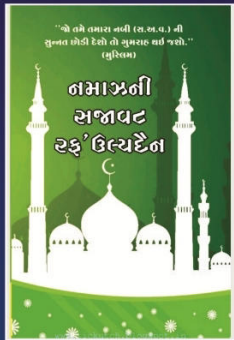
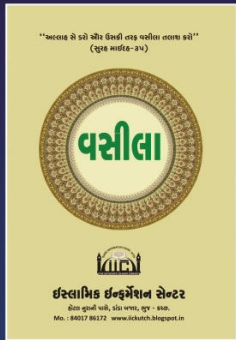
ફસ્લ

બા'ઝ ઉન ગુનાહોં કા બયાન, જિનકે કબીરા હોને મેં એહતિમાલ હૈ :—

- રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ-સલ્લમ ને ફરમાયા —
“જિસને કિસીકી બીવી યા ગુલામ કો ઉસકે ખિલાફ ભડકાયા, વો હમમેં સે નહીં.”
(મુલાહેઝા હો : સિલસિલતુલ અહાદીસ અલ-સહીહા, હદીસ નં. ૩૨૪)
- રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ-સલ્લમ ને ફરમાયા —
“જિસને અપને (મુસલમાન) ભાઈ કો એક સાલ તક છોડે રખા, તો યે ઉસકા ખૂન બહાને કી માનિંદ હૈ.” (ઇસકો ઈમામ અહમદ ઓર અબૂ દાઉદ વગૈરહને રિવાયત કિયા હૈ, મુલાહેઝા હો : સહીહુલ જામેઅ, હદીસ નં. ૬૫૮૧)
- રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ-સલ્લમ ને ફરમાયા —
“અલ્લાહ કી મુકરર કરદા કિસી હદ કે નિફાઝ મેં, જિસકી સિફારિશ હાઈલ હો ગઈ, ઉસને અલ્લાહ કે અમ્ન કી મુખાલિફત કી.” (ઇસકો અબૂ દાઉદ ઓર તબરાની વગૈરહને રિવાયત કિયા હૈ, મુલાહેઝા હો : સહીહુલ જામેઅ, હદીસ નં. ૬૧૮૬)
- રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ-સલ્લમ ને ફરમાયા —
“મુનાફિક કો સરદાર ના કહો, ક્યૂં કે અગર વો તુમહારા સરદાર હો ગયા તો સમજો કે તુમને અપને રબ કો નારાઝ કર દિયા.” (ઇસકો ઈમામ અહમદ, અબૂ દાઉદ ઓર નિસાઈ ને રિવાયત કિયા હૈ, મુલાહેઝા હો : સહીહુલ જામેઅ, હદીસ નં. ૭૪૦૫)
- રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ-સલ્લમ ને ફરમાયા —
“જિસને બિલા ઈજાઝત કિસીકે ઘર મેં ઝાંકા તો ઉસકે લિયે રવા હૈ કે ઉસકી આંખે ફોડ દેં.” (ઇસકો ઈમામ મુસ્લિમ ને રિવાયા કિયા હૈ)
- રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલયહિ વ-સલ્લમ ને ફરમાયા —
“વો શપ્સ અલ્લાહ ત્આલાકા ભી શુક્રગુઝાર નહીં હો સકતા, જો લોગોં કા શુક્ર અદા ના કરે.” (ઇસે ઈમામ અહમદ, અબૂ દાઉદ ઓર ઈબ્ને હિબ્બાન ને રિવાયત કિયા હૈ, મુલાહેઝા હો : સહીહુલ જામેઅ, હદીસ નં. ૭૭૧૮)



ઈસ્લામિક ઈન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ દ્વારા પ્રકાશિત કેટલાક પુસ્તકો



ઈસ્લામિક ઈન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ

નૂરાની હોટલ પાસે, ડાંડા બજાર, ભૂજ (કચ્છ)

મો. : +91 8401786172

Blog : www.iickutch.blogspot.in